https://swatantrajansamachar.com

वर्ष : 21 I अंक : 11 I मूल्य 20/-
16 जनवरी से 31 जनवरी 2025

स्वतंत्र जनसमाचार

७६वां गणतंत्र दिवस

सबके साथ, सच के साथ

स्वर्णिम भारत -विरासत और विकास

महाकुम्भ प्रयागराज 2025
भक्ति वेदान्त नगर काशी (खालसा)
भक्तिरस की अद्भुत वर्षा
श्री रामकथा
12 जनवरी से 12 फरवरी 2025
कथा समय :
दोपहर 3:00 बजे से सांय 7:00 बजे तक
महन्त श्री हरिहरदास जी महाराज
श्री राम कथा
योगा शिविर
संत सेवा
विद्वत् सम्मेलन
चिकित्सा शिविर
रासलीला-रामलीला
दैनिक भण्डारा
दैनिक यज्ञ
परमपूज्य जगद्गुरु
स्वामी वेदान्ती जी महाराज
स्थान : भक्ति वेदान्त नगर काशी संगम लोवर मार्ग, त्रिवेणी चौराहा, सेक्टर - 20, प्रयागराज
सम्पर्क सूत्र: +91-9839266546, 7300800634, 8218449984, 7500018662, 9953223300

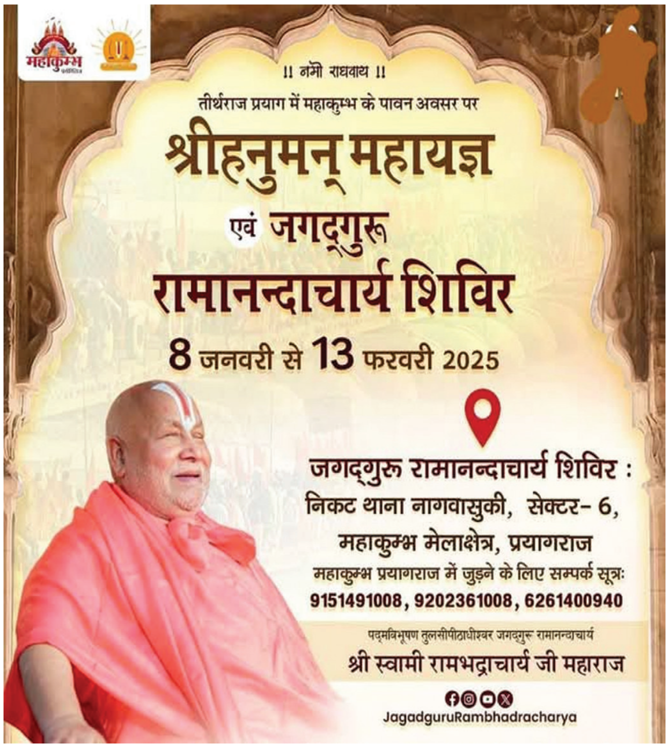
।। नमो राघवाय ।।
तीर्थराज प्रयाग में महाकुम्भ के पावन अवसर पर
श्रीहनुमन् महायज्ञ
एवं जगद्गुरू
रामानन्दाचार्य शिविर
8 जनवरी से 13 फरवरी 2025
जगद्गुरू रामानन्दाचार्य शिविर :
निकट थाना नागवासुकी, सेक्टर- 6,
महाकुम्भ मेलाक्षेत्र, प्रयागराज
महाकुम्भ प्रयागराज में जुड़ने के लिए सम्पर्क सूत्रः
9151491008, 9202361008, 6261400940
पद्मविभूषण तुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरू रामानन्दाचार्य
श्री स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज
JagadguruRambhadracharya

12 वर्षों की प्रतीक्षा के बाद,
प्रयागराज एक बार फिर दिव्य और भव्य महाकुंभ
के आलौकिक अनुभव का साक्षी बनने जा रहा है।
महाकुंभ
श्रीमद् भागवत कथा
20 से 26 जनवरी 2025
श्री राम कथा
28 जनवरी से 5 फरवरी 2025
11 लाख पार्थिव शिवलिंग निर्माण
एवं
श्री शिव महापुराण कथा
6 से 14 फरवरी 2025
शांति सेवा शिविर
परम पूज्य शांतिदूत धर्मरत्न
श्री देवकीनंदन ठाकुर जी महाराज
इस आयोजन में यजमान बनने एवं कल्पवास करने
के संबंध में अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
7351112221, 7351113331
www.vssct.com

26
JANUARY
गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
मदनमोहन गोस्वामी
उत्तराखंडी समाजसेवी

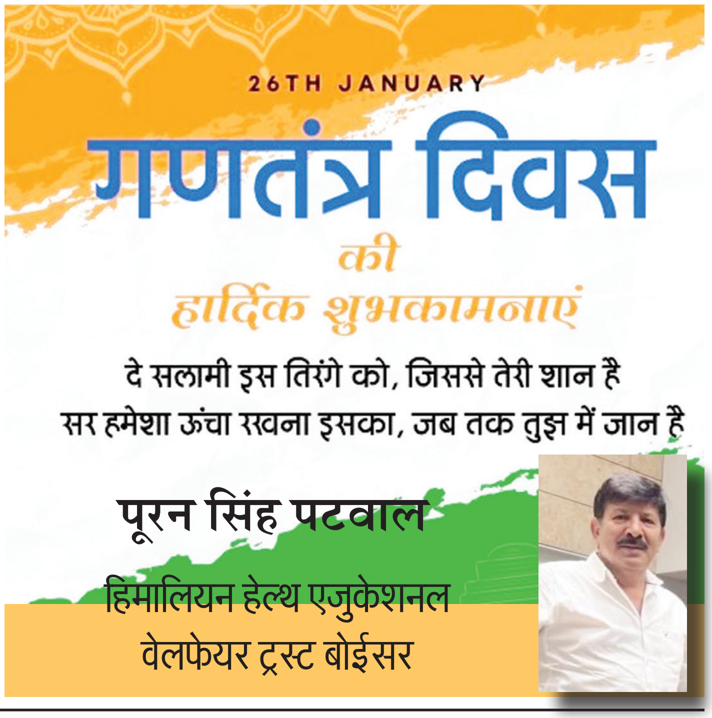
26TH JANUARY
गणतंत्र दिवस
की
हार्दिक शुभकामनाएं
दे सलामी इस तिरंगे को, जिससे तेरी शान है
सर हमेशा ऊंचा रखना इसका, जब तक तुझ में जान है
पूरन सिंह पटवाल
हिमालियन हेल्थ एजुकेशनल
वेलफेयर ट्रस्ट बोईसर

स्वतंत्र जनसमाचार

❖ संपादक ❖
दयाकृष्ण जोशी

❖ कार्यकारी संपादक ❖
राकेश खंकरियाल 'निर्मोही'

❖ संपादकीय मंडल ❖
ॲड. शीतला प्रसाद पांडेय
राकेश शर्मा
जगमोहन रौतेला
हेमंत मैथिल
राजेंद्रनाथ गोस्वामी
सुधीर जोशी
जॉन मेढे
संजय बलोदी प्रखर

❖ साहित्य संपादक ❖
अमर त्रिपाठी

❖ कला और सज्जा ❖
मनोज नायक

❖ आर्ट डायरेक्टर ❖
मोहम्मद जमशेद

❖ पंजीकृत कार्यालय ❖
उत्कर्ष क्रिएटिव सर्विसेस
19/28, प्रभात कालोनी,
आनंद नगर, सांताक्रूज (पू),
मुंबई-400055.

❖ संपादकीय कार्यालय ❖
उत्कर्ष क्रिएटिव सर्विसेस
बेसमेंट नं. 3,कामदार शॉपिंग सेंटर,
कामदार को-ऑप, सोसायटी,
तेजपाल रोड विलेपार्ले (पूर्व),
मुंबई-400057
मो. 9869477697
मो. 9167014505

16 जनवरी से 31 जनवरी २०२५

मूल्यवान सदस्य हैं उम्रदराज लोग	पेज 04
स्वर्णिम भारत -विरासत और विकास	पेज 05
असुरक्षित है महाराष्ट्र	पेज 06
मस्कुलर बाबा हुए फेमस	पेज 07
हमला एक, सवाल हजार	पेज 8-9
अमेरिकी नागरिकों को भरमाने पेज	10-11
बदलने लगी है कुंभ की प्रवृति	पेज 12 -13
महाराष्ट्र में सबसे ठीक व्यावसायिक...	पेज 14
समुद्र में चीन की दादागीरी ...	पेज16-17
पुष्प प्रदर्शनी 31जनवरी से 2फरवरी	पेज 19
भारत-ब्राजील कृषि सहयोग	पेज 20-21
अखाड़ों में संन्यासियों को नागा...	पेज 22
सिताबानी की महारानी नककटी ...	पेज 25

उत्कर्ष क्रिएटिव सर्विसेज के लिए मुद्रक प्रकाशक-दयाकृष्ण जोशी ने एम/ एस उत्कर्ष प्रिंटर्स, 19/28, प्रभात कालोनी, आनंदनगर, सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई-400055 से छपाकर प्रकाशित किया। (इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखक/ पत्रकारों के अपने हैं, उनका संपादक/ माल के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है।) (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुंबई होगा)
E-mail: rakeshkhankriyalnirmohi@gmail.com Mo.9167014505
सर्वाधिकार कार्यकारी संपादक के अधीन RNI NO.: MAHHIN/2003/10876

संपादकीय

मूल्यवान सदस्य हैं उम्रदराज लोग

वृद्ध लोग समाज के मूल्यवान सदस्य हाल ही में सऊदी अरब के रियाद में ग्लोबल हेल्थ स्पैन शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिसमें स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं पर वक्ताओं ने खुलकर चर्चा की। सम्मेलन में सबसे अहम बात बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिंता के रूप में उभरकर सामने आई। सम्मेलन में करीब दो हजार से अधिक वैज्ञानिक, उद्यमी, नीति निर्माता और विचारक एकत्रित हुए। उन्होंने बुजुर्ग होते समाज के भविष्य के समक्ष आने वाले महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गहनता से चर्चा की। उनका कहना है कि दुनिया में स्वस्थ वृद्धावस्था के अप्रयुक्त अवसरों के साथ-साथ उभरते हस्तक्षेप, प्रौद्योगिकी, नीतिगत परिवर्तन और भविष्य के लिए आवश्यक निवेश पर खुलकर चर्चा की जानी चाहिए। सम्मेलन में यह बात भी सामने आई कि आज वैश्विक औसत जीवन प्रत्याशा 73.4 वर्ष है, जिसके बढ़कर सौ साल होने की उम्मीद की जा सकती है। वक्ताओं ने कहा कि जीवन प्रत्याशा में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद हमारे जीवन के अंतिम वर्ष अक्सर दीर्घकालिक बीमारी में गुजर रहे हैं। उम्र बढने के साथ कई पूर्वाग्रह और बुढ़ापे को सामाजिक और आर्थिक बोझ के रूप में पेश करने की कहानी सामने आ रही है। कोलंबिया विविद्यालय में प्रोफेसर जॉन आर. बिर्यड ने कहा कि कामकाजी उम्र की आबादी में वृद्ध आश्रितों की संख्या का

अनुपात नकारात्मक धारणाओं को मजबूत करता है और समाज में वृद्ध वयस्कों के सार्थक योगदान को नजरअंदाज करता है। अमेरिका और यूरोप में वृद्ध वयस्क भुगतान किए गए काम, स्वयं सेवा और देखभाल के माध्यम से सकल घरेलू उत्पाद का अनुमानित सात फीसद योगदान करते हैं। उन्होंने कहा कि वृद्ध आबादी आर्थिक स्थिरता और नवाचार के लिए भी एक अप्रयुक्त शक्ति हो सकती है। अमेरिका में 50 से अधिक उम्र के उद्यमियों की संख्या साल 2007 के मुकाबले साल 2024 में दोगुनी हो गई है। उन्होंने कहा कि लंबे समय तक जीने से हमें रिटायरमेंट शब्द से भी रिटायर होना पड़ सकता है। अनुमानित जीवनकाल शताब्दी के करीब पहुंचने के साथ हम उम्मीद कर सकते हैं कि हमारा कामकाजी जीवन अतिरिक्त 20- 40 वर्षो तक बढ़ जाएगा। यह शिक्षा और काम के बारे में हमारी सोच को फिर से परिभाषित करेगा। वहीं कार्यबल में बने रहने के कारण अर्थशास्त्र से परे भी है। इस बात के बढ़ते प्रमाण हैं कि सेवानिवृत्ति के बाद काम करने से हृदय रोग और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का जोखिम कम होता है। साथ ही मानसिक प्रगति और सामाजिक जुड़ाव भी मिलता है। उन्होंने कहा कि वृद्ध लोगों को समाज के मूल्यवान सदस्य के रूप में स्वीकार करने के लिए नकारात्मक रूढ़िवादिता को समाप्त करना होगा तथा लंबी आयु के लाभों के बारे में सार्वजनिक धारणा को व्यक्तियों, समाजों और अर्थव्यवस्था तक पहुंचाना होगा। विशेषज्ञों का कहना है कि विकसित देशों में स्वास्थ्य सेवा की लागत का बड़ा हिस्सा उम्र बढने और उम्र से संबंधित बीमारियों से प्रेरित है। फिर भी उम्र बढने और स्वास्थ्य अवधि विज्ञान को बहुत कम धन उपलब्ध है। अमेरिका अल्जाइमर रोग के इलाज पर सालाना लगभग 305 बिलियन डॉलर खर्च करता है। यह आंकड़ा 2050 तक 1.1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक होने की उम्मीद है। यूएस रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र का अनुमान है कि हृदय रोग और स्ट्रोक के कारण देश को स्वास्थ्य सेवा व्यय और उत्पादकता हानि के रूप में प्रतिवर्ष 363 बिलियन डॉलर का नुकसान होता है। मधुमेह के कारण अनुमानित वार्षिक स्वास्थ्य और आर्थिक बोझ 327 बिलियन डॉलर है, जबकि गठिया और संबंधित बीमारियों के कारण होने वाला खर्च 303 बिलियन डॉलर से अधिक है। वहीं देश वृद्धावस्था के लक्षणों के उपचार पर अरबों डॉलर खर्च करता है। अमेरिकी राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान के वार्षिक अनुसंधान बजट का एक प्रतिशत से भी कम या 337 मिलियन डॉलर वृद्धावस्था के जीव विज्ञान को समझने में खर्च होता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि उम्र बढने के मूल कारणों को संबोधित करने से व्यक्तिगत बीमारियों को लक्षित करने की तुलना में निवेश पर अधिक लाभ मिल सकता है। विशेषज्ञ कहते हैं कि विश्व की जनसांख्यिकी संरचना में परिवर्तन हो रहा है तथा अनुमान है कि 60 वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या 2050 तक दोगुनी हो जाएगी।

स्वर्णिम भारत -विरासत और विकास

● राजेन्द्र रंजन चतुर्वेदी

गणतन्त्र-दिवस पर आयोजित होने वाली परेड एक महत्त्वपूर्ण अवसर होता है, जिसमें भारत राष्ट्र की अस्मिता प्रत्यक्ष होती है। इस परेड की परिकल्पना में उस समष्टि-मेधा की भूमिका रेखांकित करने योग्य है, जिसने स्वतन्त्रता का संघर्ष किया था! राष्ट्र की प्रत्यक्ष अनुभूति की थी! कपिला वात्स्यायन ने बतलाया था कि किस प्रकार से इन झाँकियों की रिहर्सल के समय पंडित जवाहर लाल नेहरू आ जाया करते थे और सुझाव भी देते थे और शाबासी भी देते थे।

इस परेड के तीन अंग हैं। एक तो राष्ट्र-राज्य की शक्ति और पराक्रम की अभिव्यक्ति है! दूसरी बात है विकास और आधुनिक-विश्व की दिशा में राजसत्ता तथा जनसत्ता के बढ़ते हुए कदम! तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है देश के कोने-कोने की सांस्कृतिक-अस्मिता का बोध , इसमें संघ -राज्य की प्रत्येक इकाई के लोकजीवन का प्रतिनिधित्व होता है, यह लोकसत्ता है। इसमें जनजातीय संस्कृति और आदिवासी जनगण भी सम्मिलित होते हैं।

ध्यान रखने की बात है कि स्वतन्त्रता के युद्ध का सूत्रपात १८५७ से भी पहले जनजातियों और आदिवासियों के विद्रोह से हो चुका था! जैसे जब हम जल से भरी एक पतीली को अँगीठी पर चढ़ाते हैं , तब वह एक दम से ही नहीं खौलने लगता !पहले पतीली में सन-सन करती हुई एक-एक बूँद किनारों पर उठती है , बाद में समूची पतीली का जल खौल उठता है ! इसी प्रकार स्वतन्त्रता की चेतना एक दम से विकसित नहीं हो गयी! सबसे पहला प्रहार भी जनजातियों और आदिवासियों ने ही झेला था, राजा और रानी तो तब उठे थे, जब उन पर प्रहार हुआ था!

उसके बाद का संघर्ष सामान्य जनता के संघर्ष के रूप में बदलता चला गया! लोकचेतना का उद्वेलन हुआ! स्वतन्त्रता-संघर्ष में लोक की अवधारणाओं, मिथकों और कुंभ अथवा गणेशपूजा जैसे लोकपर्व की भूमिका पर इतिहासकारों का उतना ध्यान गया ही नहीं है! रामराज्य की अवधारणा लोक की ही अवधारणा थी! भारतमाता क्या है ? वह किसी नारी का नाम नहीं है, वह एक मिथक ही तो है! मिथक लोकमानस का सच है और वह मिथकों की भाषा में ही सोचता है! लोकसंस्कृति की झाँकियों का महत्त्व उसकी निरन्तरता के सूत्र का है! निरन्तरता, जिसे भारतीय विचारकों ने अनादि कहा था! संस्कृतियों की असंख्य धाराएं भारत के लोकजीवन में बहती रहीं और एक दूसरे में समाती चली गयीं ! इनकी अन्तर्भुक्ति लोकजीवन के इतिहास का सर्वोपरि सत्य है! इनमें भारत के उस जन की अभिव्यक्ति होती है, जिसने समष्टि-जीवन का विकास किया। ●

परेड के तीन अंग हैं! एक तो राष्ट्र-राज्य की शक्ति और पराक्रम की अभिव्यक्ति है! दूसरी बात है विकास और आधुनिक-विश्व की दिशा में राजसत्ता तथा जनसत्ता के बढ़ते हुए कदम! तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग है देश के कोने-कोने की सांस्कृतिक-अस्मिता का बोध , इसमें संघ -राज्य की प्रत्येक इकाई के लोकजीवन का प्रतिनिधित्व होता है, यह लोकसत्ता है! इसमें जनजातीय संस्कृति और आदिवासी जनगण भी सम्मिलित होते हैं!

असुरक्षित है महाराष्ट्र

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष नाना पटोले ने कहा कि अब दिल्ली में महाराष्ट्र की चर्चा जंगलराज के रूप में हो रही है. मुंबई में सेलिब्रिटी और गांव में सरपंच सुरक्षित नहीं है. ऐसे मे आम जनता का क्या हाल होगा? भाजपा सरकार ने महाराष्ट्र को कलंकित करने का काम किया है. वह सत्ता के लिए दहशत फैलाने का काम कर रही है. यह सब रोकना चाहिए. पटोले शनिवार को यहां पत्रकारों से बोल रहे थे. उन्होंने कहा कि अभिनेता सैफ अली खान पर हुए हमले को धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं देखना चाहिए. छत्रपति शिवाजी महाराज के महाराष्ट्र में जाति-धर्म के नाम पर भेदभाव का कोई स्थान नहीं है. प्रदेश की सुरक्षा केवल गृह मंत्री की जवाबदारी नहीं, लेकिन मंत्रिमंडल में 65% मंत्री दागी होंगे तो इससे भी भयावह चित्र दिखेगा. मस्साजोग में सरपंच संतोष देशमुख की हत्या एवं परभणी में सोमनाथ सूर्यवंशी

की पुलिस मारपीट में मृत्यु जैसी घटनाओं से महाराष्ट्र का नाम ख़राब हो रहा है.

दावोस जाकर पैसे की बर्बाद न करें फडणवीस

धर्म से जोड़ता गलत है. उन्होंने महायुति सरकार पर मराठा-ओबीसी विवाद खड़ा करने का आरोप लगाया. मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की दावोस यात्रा पर पटोले ने कहा कि एकनाथ शिंदे भी वहां गए थे. फडणवीस ने शिंदे की नकल नहीं करनी चाहिए. महाराष्ट्र नंवर 11 पर पहुंच गया है.

पची नहीं परिवहन मंत्री की बातें - आदित्य

गाड़ियों का रजिस्ट्रेशन मतलब खरीदने से पहले पार्किंग की सुविधा होना अनिवार्य करने का राज्य सरकार का नया प्रस्ताव इन दिनों चर्चा में है। मुंबई, पुणे और नागपुर जैसे शहरों में पार्किंग की समस्या और ट्रैफिक जाम का हवाला देते हुए इस निर्णय को सरकार महत्वपूर्ण बता रही है, लेकिन वाहन मालिकों और विरोधी दलों की प्रतिक्रिया इस प्रस्ताव पर विरोधाभाषी है। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) पक्ष नेता और विधायक आदित्य ठाकरे परिवहन मंत्री प्रताप सरनाईक के बयान पर भड़क उठे उन्होंने कहा कि गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन के लिए पार्किंग सुविधा सुनिश्चित करना सही हो सकता है, लेकिन सरकार को इस तरह की नीतियां लागू करने से पहले जनता से संवाद करना चाहिए।

सरकार पहले अच्छी और खड़ा मुक्त सड़कों को कर दिखाओ।जब पहले से ही सड़कें अच्छी स्थिति में नहीं हैं, पार्किंग की पर्याप्त सुविधा नहीं है, तो नई समस्याएं खड़ी करना गलत है। आदित्य ठाकरे ने कहा कि आज मुंबई जैसे बड़े शहरों में सड़कों की स्थिति अच्छी नहीं है और पार्किंग की सुविधा कम है, तो इस नियम को लागू कर इस तरह नई परेशानियां खड़ी करना गलत है। ऐसी नीतियां केवल लागू करने से पहले सरकार को नागरिकों से संवाद करना चाहिए। इसके साथ उन्होंने यह भी कहा कि जनता के साथ हम अन्याय नहीं होने देंगे।

उन्होंने इस नीति पर सवाल उठाते हुए कहा कि क्या इस नीति का खामियाजा वाहन मालिकों को भुगतना पड़ेगा?

क्या है प्रस्ताव

महाराष्ट्र सरकार ने प्रस्ताव रखा है कि केवल उन्हीं लोगों को कार खरीदने की अनुमति होगी, जिनके पास अपने घर या सोसाइटी में पार्किंग की पर्याप्त जगह होगी। इसके लिए प्रमाणित पार्किंग क्षेत्र का प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। इस प्रस्ताव को राज्य परिवहन आयुक्त विवेक भीमनवार ने तैयार किया है और यह *0 दिसंबर को मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। हालांकि, इस प्रस्ताव को अभी अंतिम मंजूरी नहीं मिली है।

महाकुंभ की झलकियां

मस्कुलर बाबा हुए फेमस

महाकुंभ 2025 के मेले को देखने के लिए देश-विदेश से लोग पहुंच रहे हैं. यहां पर भक्तों का सैलाब है. प्रयागराज में इस समय दुनियाभर के संत और महात्माओं का जमावड़ा लगा हुआ है. हर बावा अपने अंदर एक चमत्कार लिए हुए है. इस समय मेले में सात फुट के मस्कुलर बाथा छाए हुए हैं. उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं. उनका डौल डौल देखकर कोई भी उन्हें बॉडी विल्डर कह सकता है. यह जब भी भीड़ से निकलते हैं पर्यटकों की निगाहें उन पर टिक जाती है. सात फीट के कद वाले मस्कुलर बॉडी वाला शख्स क्या बाया हो सकता है. इस दौरान बाबा पर लोगों की नजरें टिकी हुई है यह बाचा भारत का नहीं, बल्कि रूस का है. दमदार बॉडी वाले इस

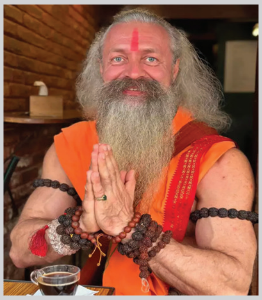

मस्कुलर बावा का नाम आत्मा प्रेम गिरी महाराज है. इन्हें लोग मस्कुलर बाबा के नाम से पुकारते हैं मस्कुलर बाबा बीते 30 सालों से हिंदू धर्म से संबंध रखते है. पहले वे पेशे से एक टीचर थे. बाद में उन्होंने सनातन धर्म को अपना लिया. उन्होंने जॉब के साथ दुनियादारी भी छोड़ दी. वे बाबा बन गए. बताया जा रहा है कि बाबा नेपाल में रहते हैं. वे पायलट बाबा के शिष्य भी रहे हैं महाकुंभ में बाबा तव चर्चा में आए, जब एक यूजर ने बाबा की तस्वीर अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर सेयर की. उस समय पूरा सोशल मीडिया पर मस्कुलर बाबा की एक तस्वीर तेजी से वायरल हो गई.

100 साल से हर बार शामिल होते हैं स्वामी शिवानंद

पद्मश्री से सम्मानित योग साधक स्वामी शिवानंद बाबा पिछले 100 साल से हर कुंभ (प्रयागराज, नासिक, उज्जैन, हरिद्वार) में शामिल हो रहे हैं. यह दावा उनके शिष्य संजय सर्वजाना ने किया है. इस बार भी सेक्टर 16 में संगम लोअर मार्ग पर बाबा का शिविर लगा है. शिविर के बाहर लगे बैनर में छपे उनके आधार कार्ड में जन्मतिथि आठ, अगस्त

1896 दर्ज है. इस हिसाब से उनकी उम्र 128 वर्ष होने का अनुमान है.

स्वामी शिवानंद के बेंगलुरु निवासी शिष्य फाल्गुन भट्टाचार्य ने बताया कि बाबा का जन्म भिखारी परिवार में हुआ था. चार साल की उम्र में मां-बाप ने इन्हें गांव में आए संत ओंकारानंद गोस्वामी को सौंप दिया ताकि इन्हें खाना पीना तो मिल सके. बाबा ने चार साल की उम्र तक दूध, फल, रोटी नहीं देखी. इसी के चलते उनकी जीवनशैली ऐसी बन गई कि वह आधा पेट ही भोजन करते हैं. बाबा रात नौ बजे तक सो जाते हैं और सुबह तीन बजे उठते हैं और शौच आदि से निवृत्त होकर योग ध्यान करते हैं. वह दिन में बिल्कुल भी नहीं सोते.

इस उम्र में भी करते हैं कठिन आसन

दिल्ली से आए हीरामन बिस्वास ने बताया कि वह बाबा के संपर्क में 2010 में आए थे. वह उनकी फिटनेस से बहुत प्रभावित हैं. उन्होंने बताया कि बाबा किसी से दान नहीं लेते, उबला हुआ खाना खाते हैं. इस उम्र में भी कठिन से कठिन योगासन आसानी से कर लेते हैं.

युवाओं को संदेश सुबह जल्दी उठो

बाबा शिवानंद ने युवा को पीढ़ी को दिए अपने संदेश में कहा कि युवाओं को सुबह जल्दी उठकर आधा घंटा योग करना चाहिए, संतुलित जीवनशैली अपनानी चाहिए और स्वस्थ रहने के लिए प्रतिदिन टहलना चाहिए.

एयरोस्पेस इंजीनियर बन गया 'इंजीनियर बाबा'

इस बार महाकुंभ में कई युवा संन्यासी लोगों का ध्यान खींच रहे हैं. इनमें से एक हैं संन्यासी अजय सिंह. इनकी कहानी सुनकर लोग दांतों तले उंगलिया दबा लेते हैं. मीडिया के लोगों ने जब इस युवा संन्यासी से बातचीत शुरू की तो उनके बारे में जानकर हैरान रह गए, अजय सिंह ने आईआईटी मुंबई से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है.

हालांकि उनका दुनियादारी में मन नहीं लगा और वे संन्यास की राह पर बढ़ गए. इस आईआईटीयन बाबा का असली नाम अभय सिंह है. उनके इंस्टाग्राम हैंडल को खंगालने के बाद पता चलता है वह मूलरूप से हरियाणा के रहने वाले हैं. इंस्टाग्राम पर उनके इंजीनियरिंग के दिनों की तस्वीरें दिखती हैं.

हमला एक, सवाल हजार

क्या है घटना का असली राज

ग्लैमर

सुधीर जोशी
वरिष्ठ पत्रकार

पहली बनकर रह जाएगा राज

फिल्मी पर्दे पर हजारों किरदार निभाने अभिनेता के निजी जीवन में भी फिल्मी कहानी जैसा ही कुछ हो जाए तो लोग आश्चर्य व्यक्त करते हैं. विगत 15 जनवरी की देर रात सिने अभिनेता सैफ अली खान के घर घुसकर एक कथित बांग्लादेशी युवक ने सैफ पर चाकु से पांच वार करके उसे लहुलुहान कर दिया. खून से लतपत सैफ अली खान जब अपने छोटे बेटे तैमूर खान के साथ लीलावती अस्पताल पहुंचे तो वहां के डाक्टर ने कहा कि सैफ अली खान असली हीरो हैं जो खून के सना शरीर लेकर यहां आए हैं. डाक्टर ने सैफ को भर्ती किया 6 घंटे तक आपरेशन किया. पांच दिन के इलाज के बाद सैफ अली खान ठीक होकर फिर उसी घर में वापस लौटे तो शिवसेना को दोनों घटकों ने नेताओं ने कहा कि इतना बड़ी जख्म इतनी जल्दी कैसे ठीक हो गई. अस्पताल के सर्जरी कराके लौटे सैफ अली खान कुछ इस अंजाद में घर लौटे जैसे वे किसी फिल्म की शूटिंग के बाद घर आए हों.

सच तो यह है कि सैफ पर हमला होने और उनके अस्पताल ले जाने और फिर इस मामले में पुलिस तथा सरकार सबमें कुछ भी पारदर्शक नहीं है. रइसो की सोसाइटी में किसी का यूं ही घुस जाना और उस घर के प्रमुख व्यक्ति पर चाकू से एक नहीं पांच बार हमला कर देना यह सब कुछ फिल्मी ही लगता है. मुंबई किसी की हाईप्रोफाइल लोगों के घर में जाने पर यूं ही किसी घर में जाना आसन काम नहीं. यह को तभी संभव हो सकता है, जब सोसाइटी में रहने वाले किसी की उसके साथ साठगांठ हो. जिस वक्त सैफ पर हमला हुआ, उस वक्त उनके

घर आठ लोग मौजूद थे, लेकिन किसी ने भी हमलावर को पकड़ने की कोशिश नहीं की. हमला करने के बाद वह 12 मंजिल नीचे उतरा तब भी किसी को यह नहीं सुझा कि लिफ्ट का उपयोग कर नीचे उतरकर उस हमलावर को पकड़ा जाए. इस पूरे मामले में सवाल तो कई हैं, पर उनके जवाब किसी के पास नहीं है. हमले क्यों हुआ, किसने किया, इसके पीछे किसका हाथ है, जिसे पुलिस ने पकड़ा है, वह असली अपराधी नहीं है. जैसी कई सवाल लगातार उठ रहे हैं.

लीलावती अस्पताल से निकलने के बाद सैफ

का डैशिंग लुक देखने को मिला, वह आराम से चलते नजर आए और यह देख प्रशंसक हैरान रह गए. हमला और सर्जरी के बाद सैफ को चलता देख लोग सोशल मीडिया पर सवाल उठा रहे हैं.अभिनेता सैफ अली खान पर 16 जनवरी को बांद्रा स्थित आवास पर हमला हुआ. हमलावर ने अभिनेता पर पांच बार चाकू से वार किया, जिनमें से दो वार बहुत गहरे थे. लेकिन सैफ के इन गहरे वार के साथ ही इस घटना के राज भी बहुत गहरे हैं.

रिपोर्टों से पता चला है कि सैफ की रिहाई से संबंधित दस्तावेज 20 जनवरी की रात को दाखिल किए गए थे. चाकू लगने के बाद अभिनेता के स्वास्थ्य में सुधार के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई. अभिनेता की पीठ में फंसे चाकू के टुकड़े को निकालने के लिए आपातकालीन सर्जरी की गईय. अस्पताल ने 3 इंच लंबे धारदार चाकू के टुकड़े की तस्वीर जारी की जो उसकी पीठ में घुस गया था. हमलावर ने अपने परिवार को बचाने की कोशिश कर रहे सैफ पर चाकू से छह बार वार किया, इनमें से दो घाव गंभीर थे, क्योंकि वे रीढ़ के पास थे, यह घटना सुबह करीब 2:15 बजे हुई. घुसपैठिये ने पहले घर के नौकर पर हमला किया और फिर जब अभिनेता ने उसे रोकने की कोशिश की तो हमलावर ने सैफ पर चाकू से हमला कर दिया. आरोपी मोहम्मद शहजाद को बाद में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और पता चला कि वह बांग्लादेशी नागरिक है. सर्जरी के बाद सैफ अली खान का चलते हुए एक वीडियो जब सोशल मीडिया पर सामने आया तो एक नेटिजन ने लिखा- 'वाह, ये कैसा मजाक है?' लीलावती का जादू अद्भुत है, क्या मैं गंभीर चोट की सर्जरी के बाद पार्क में टहलने जा सकता हूँ? यह निश्चित रूप से एक फिल्म की कहानी जैसा लगता है. एक अन्य यूजर ने टिप्पणी की, ₹रीढ़ की हड्डी में चोट के साथ एक आदमी इस तरह चलता है?₹ क्या यह सचमुच ऐसा ही था या कुछ और? एक अन्य व्यक्ति ने लिखा, 'वाह, किसी को चाकू मार दिया गया और उनकी रीढ़ की हड्डी की चोट इतनी जल्दी ठीक हो गई?' यहां तक कि एक साधारण चोट को भी ठीक होने में एक महीना लग जाता है. शिवसेना (एकनाथ गुट) के नेता संजय निरुपम ने भी सैफ अली खान की तबीयत को लेकर सवाल उठाए हैं. उन्होंने इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर लिखा, 'डॉक्टर ने बताया कि चाकू सैफ अली खान की पीठ में 2.5 इंच तक घुस गया है. शायद वह अंदर फंस गया था, ऑपरेशन लगातार 6 घंटे तक जारी रहा. यह सब 16 जनवरी को हुआ और महज पांच दिन बाद यानि 21 जनवरी को सैफ इस तरह घर लौटे हैं कि जैसे उन्हें कुछ हुआ ही नहीं था. निरूपम से सवाल किया कि क्या अस्पताल से निकलते ही सैफ इतने फिट हो गए? यह बड़ा ही आश्चर्यजनक लग रहा है. अस्पताल के डिस्चार्ज होने के बाद सैफ अली खान को अपने घर पहुंचते ही बिल्डिंग पर पहुंचे तो यह अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद की सैफ की पहली झलक थी. सैफ खुद ही अपनी बिल्डिंग तक चले गए, उन्होंने सफेद शर्ट और नीली डेनिम जींस पहन रखी थी. एक्टर का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें वह तेजी से घर की ओर चलते नजर आ रहे हैं.

सवाल है कि जिस घटना की नींव ही झूठ पर खड़ी की गई है, उसे लेकर अभी कई दिनों तक झूठ ही फैलाया जाता रहेगा, पूरा सच सामने आएगा यह तो पता नहीं लेकिन इतना तो तय है कि सैफ पर हुए हमले की कहानी को फिल्मी कहानी बनाकर कुछ दिनों तक चलाया जाएगा और फिर एक इस मामले की जांच पर ही पर्दा डाल दिया जाएगा. अगर ईमानदारी से इस पूरे मामले की जांच की जाएगी तो सच बाहर जरूर आएगा लेकिन अगर इस मामले को ज्यादा दिनों तक खींचा गया तो यह मामला सिर्फ जांच तक ही सीमित होकर रह जाएगा और सुशांत सिंह की मौत की तरह ही सैफ अली खान पर हुआ हमला अरोपी को सजा दिए बिना ही ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा और लोग धीरे-धीरे इस मामले तो भूल जाएंगे.

सैफ पर हमला करने वाला फरार आरोपी के मुंबई की गिरफ्त में न आना भी मुंबई पुलिस की क्षमता पर सवाल उठा रहा था. देश की सर्वश्रेष्ठ पुलिस होने का सम्मान पाने वाली मुंबई पुलिस एक आरोपी को नहीं पकड़ पा रही है, वह भी इस स्थिति में जबकि गृहमंत्रालय ने एक आरोपी को पकड़ने के लिए पुलिस की 30 टुकड़ियां तथा 100 अधिकारियों को काम पर लगाया था. पुलिस ने तीन दिन के अंतराल में तीन अलग-अलग युवकों को पकड़ा.

मुंबई पुलिस ने लोकमान्य तिलक टर्मिनस से कोलकाता शालिमार एक्सप्रेस से आकाश कनौजिया नामक युवक को गिरफ्तार किया, लेकिन पूछताछ के बाद पुलिस ने आकाश कनौजिया को छोड़ दिया, लेकिन पूछताछ ने आकाश कनौजिया का जीवन ही जैसे बर्बाद हो गया. उसकी शादी तय होने वाली थी, लेकिन इस घटना ने उसकी शादी तो टूटी ही साथ ही उसे नौकरी भी नहीं मिल रही है. सवाल तो यह भी जिसे आरोपी बनाकर मुंबई पुलिस ने गिरफ्तार किया है, वह भी संदेह के दायरे में हैं, उसे बांग्लादेशी करार देकर पुलिस ने धर दबोचा है लेकिन घटना के दिन जो सीसीटीवी कैमरे से जो फोटो कैद किया गया है उसमें तथा पकड़े गए शरीफुल उर्फ विजय दास में कोई साम्यता नहीं है. लेकिन पुलिस का दावा है कि उसने जिस व्यक्ति को पकड़ा है, वही सैफ पर हमला करने वाला व्यक्ति है.

सवाल है कि जिस घटना की नींव ही झूठ पर खड़ी की गई है, उसे लेकर अभी कई दिनों तक झूठ ही फैलाया जाता रहेगा, पूरा सच सामने आएगा यह तो पता नहीं लेकिन इतना तो तय है कि सैफ पर हुए हमले की कहानी को फिल्मी कहानी बनाकर कुछ दिनों तक चलाया जाएगा और फिर एक इस मामले की जांच पर ही पर्दा डाल दिया जाएगा. अगर ईमानदारी से इस पूरे मामले की जांच की जाएगी तो सच बाहर जरूर आएगा लेकिन अगर इस मामले को ज्यादा दिनों तक खींचा गया तो यह मामला सिर्फ जांच तक ही सीमित होकर रह जाएगा और सुशांत सिंह की मौत की तरह ही सैफ अली खान पर हुआ हमला अरोपी को सजा दिए बिना ही ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा और लोग धीरे-धीरे इस मामले तो भूल जाएंगे. ●

अमेरिकी नागरिकों को भरमाने की शोसेबाजी

शंभूनाथ शुक्ल
वरिष्ठ पत्रकार
जाने-माने विश्लेषक

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी नागरिकता का जन्मसिद्ध अधिकार खत्म करने की घोषणा की है. इससे पूरी दुनिया में हड़कंप मच गया है. भारतीय लोग भी बहुत परेशान हैं, खासकर पंजाब, हरियाणा और गुजरात राज्य से, जहां कनाडा या अमेरिका जाने की होड़ रहती है. येन-केन-प्रकारेण उन्हें अमेरिका, कनाडा जाना होता है. भले इसके लिए वे वैध रास्ता चुनें या अवैध. ये लोग यहां जाने के लिए लाखों रुपए खर्च करते हैं. जमीन-जायदाद बेच कर अमेरिका जाते हैं. उन्हें लगता है, वहां जाते ही कुबेर का खजाना उन्हें मिल जाएगा, लेकिन जब तक अमेरिकी नागरिकता उन्हें न मिल जाए, उनकी जान अधर में लटकी रहती है. अमेरिकी नागरिकता पाने का एक तरीका तो है, वहां का ग्रीन कार्ड हासिल कर लेना या पक्की नौकरी पा जाना अथवा वहां पर बड़ी रकम को इन्वेस्ट करना. ये सभी रास्ते आसान नहीं हैं. इसलिए ये लोग कई बार डंकी रूट भी अपनाते हैं.

स्टूडेंट्स वीजा पर बच्चा हुआ तो भी नागरिकता नहीं

लेकिन अब मैक्सिको बॉर्डर से घुस कर अमेरिका जाना आसान नहीं होगा क्योंकि अमेरिकन साइड के इस बॉर्डर पर फौज की चौकसी बहुत टाइट कर दी गई है. वहां इमरजेंसी लगाने को कहा गया है. कनाडा साइड से अमेरिका में घुसना बहुत कठिन है. अक्सर कनाडा के उत्तर साइड में पारा माइनस 70 तक चला जाता है और किसी भी तरह घुस भी गए तो बॉर्डर पर लटके रहेंगे. उनके वहां पैदा होने वाले बच्चों को नागरिकता नहीं मिलेगी. यही नहीं स्टूडेंट वीजा पर अमेरिका जाने वाले पति-पत्नी अथवा कोई विवाहिता स्त्री वहां किसी यूनिवर्सिटी में दाखिला लेती है और उसको वहां बच्चा हुआ तो उसे भी नागरिकता नहीं मिलेगी. अमेरिकन प्रेसिडेंट हाउस की वेबसाइट में साफ लिखा गया है कि नागरिकता उन्हीं बच्चों को मिलेगी, जिनके मां-बाप में से किसी एक के पास अमेरिकी

नागरिकता होगी.

ट्रंप की घोषणा के बाद 18 राज्य सरकारें भी अदालत गईं

इससे बहुत सारे भारतीय, मैक्सिकन, पाकिस्तानी, बांग्लादेशी और श्रीलंकन के लिए संकट आ जाएगा क्योंकि इन देशों के बहुत बड़ी संख्या में लोग वहां इसी लालच

में जाते हैं कि अमेरिकी नागरिकता पा जाएंगे. अब वे क्या करेंगे? हालांकि जिस तरह से अमेरिका में सिविल राइट्स के लिए लड़ रहे लोगों और एनजीओज ने इसका विरोध शुरू किया है, उससे लगता नहीं है कि राष्ट्रपति ट्रंप संविधान में संशोधन करवा पाएंगे. प्रतिष्ठित एडवोकेट और अमेरिकी कानूनों के जानकार उत्कर्ष तिवारी कहते हैं कि अमेरिका में पैदा होने वाले बच्चों को जन्मना नागरिकता का अधिकार अमेरिकी संविधान के 14वें संशोधन के माध्यम से लाया गया था. इसलिए डोनाल्ड ट्रंप की इस घोषणा का भारी विरोध शुरू हो गया है. वहां के 50 में से 18 राज्यों की सरकारें ने ट्रंप की इस पहल के विरुद्ध अदालत चली गई हैं. इन राज्यों में डेमोक्रेटिक पार्टी की सरकारें हैं.

महंगाई बनाम राष्ट्रवाद

बोस्टन में टेक प्रोफेशनल महेंद्र सिंह के अनुसार आज की तारीख में अमेरिकी जनता महंगाई से बुरी तरह त्रस्त है. अब डोनाल्ड ट्रंप महंगाई तो दूर नहीं कर सकते इसलिए पॉपुलर होने के लिए उन्होंने यह दांव चला है. यह एक तरह से यह अमेरिकी राष्ट्रवाद को परवान चढ़ाना है. उनके अनुसार, अमेरिकी श्वेत-अश्वेत लोग कुछ डरे हुए हैं. उन्हें लगता है कि यदि बाहर के लोग आते रहे तो उनकी अपनी पहचान खत्म हो जाएगी. यह कुछ वैसा ही हुआ, जैसा मोदी ने भारत में किया.

राष्ट्रवाद के भरोसे भारत की हिंदू जनता के अंदर का कम होते जाने का भय खत्म किया. वे बताते हैं, करेगा ट्रंप भी कुछ नहीं. उसकी यह घोषणा बस नारा भर है. किंतु इससे अमेरिकी गोरे उत्साह में आकर थोड़े चौड़े जरूर हो जाएंगे. वे डोनाल्ड ट्रंप को पसंद भी इसीलिए कर रहे थे. कुल मिला कर यह सिर्फ एक अमेरिकी जनता को भरमाने की शोसेबाजी है.

अमेरिका में मैक्सिको और चाइनीज सबसे ज्यादा

अमेरिका में 54 लाख के करीब भारतीय हैं. यह संख्या कोई बहुत अधिक नहीं है किंतु भारतीय राजनीति में मुखर हो गए हैं, यह बात वहां के श्वेत समुदाय को अखरती है. वैसे चाइनीज और मैक्सिकन आबादी वहां सबसे अधिक है. पर चायनीज अनुशासित रहते हैं और मैक्सिकन तो अमेरिकी मूल के ही हैं. इसलिए अमेरिका के लोग गुस्सा साउथ एशियंस पर निकालते हैं. इसमें भारतीय, पाकिस्तानी, बांग्लादेशी और श्रीलंकन शामिल हैं. भारतीयों में सिखों की पहचान उजागर हो जाती है. इसलिए जाहिर है अगर प्रवासियों पर अंकुश लगाया गया तो भारतीयों पर सबसे ज्यादा असर पड़ेगा.

ट्रंप का बड़बोलापन

पेंसिलवानिया के फिलाडेल्फिया में रह रहे अतुल अरोड़ा के अनुसार यह डोनाल्ड ट्रंप की बार्गेन चिप है. उसका असली मकसद catch and release (illegal) migrants कानून को रद्द करवाना है. क्योंकि आमतौर पर अमेरिका में अवैध रूप से अमेरिका आने वालों को पुलिस पकड़ती जरूर है पर ये लोग छूट भी जाते हैं. इसलिए अमेरिका में घुसना भले जटिल हो लेकिन घुस गए तो वहां बसने में कोई दिक्कत नहीं आती. ट्रंप के समर्थक चाहते हैं अमेरिका में विदेशी बसावट को खत्म किया जाए. ट्रंप चूंकि व्यापारी हैं इसलिए उन्हें मोल-भाव करना खूब आता है. माहौल ऐसा बना दो कि प्रतिद्वंदी या तो मैदान छोड़ दे या इतना झुक जाए कि ट्रंप स्वतः बाजी मार ले जाए. डोनाल्ड ट्रंप की हरकतों को जानने वाले बताते हैं, कि ट्रंप सिर्फ बोलने के अलावा कुछ नहीं करने वाले.

कनाडा पर चुप साधी मैक्सिको खाड़ी का नाम भार बदला

कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बताने वाले डोनाल्ड ट्रंप अब कनाडा पर चुप साध गए हैं. अलबत्ता ऐसी घोषणाएं कर उन्होंने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो की छुट्टी करवा दी. अब जो भी नया प्रधानमंत्री वहां बनेगा वह ट्रंप से बना कर चलेगा.

यूं भी अक्टूबर में कनाडा में चुनाव हैं और जो हालात बन रहे हैं, उससे लगता नहीं कि अब वहां लिबरल पार्टी की सरकार बन पाएगी. कंजर्वेटिव वैसे भी ट्रंप के समर्थक होंगे. हां, ग्रीनलैंड वे पा सकते हैं. क्योंकि डेनमार्क के प्रधानमंत्री ने ग्रीन लैंड पर फैसले का अधिकार ग्रीनलैंड पर छोड़ दिया है. ग्रीनलैंड में न के बराबर आबादी है, मात्र 50 हजार. वहां के प्रधानमंत्री संभवतः रेफरेंडम को राजी हो जाएंगे. अगर वहां की जनता को अमेरिका के साथ जुड़ने में अपनी बेहतरी दिखाई दी तो वे अमेरिका में शामिल हो सकते हैं. इसी तरह मैक्सिको की खाड़ी का नाम ट्रंप ने बदल दिया है.

हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा हो जाए!

कुल मिलाकर डोनाल्ड ट्रंप हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा हो जाए का मज़ा ले रहे हैं. वे कहीं पर कोई सैन्य अभियान नहीं चलाएंगे न वास्तविक दबाव बनाएंगे. वे बस अपनी घोषणाओं से ऐसे हालात पैदा कर देंगे कि विरोधी वैसे भी पस्त हो जाएं. उनको अपने चहेते व्यापारी एलन मस्क का हित साधना है इसलिए कोई भी युद्ध उनके खिलाफ जाएगा. अमेरिकी लोग अपने सैनिकों का खून बहाया जाना भी पसंद नहीं करते इसलिए ट्रंप का जोर इस बात पर रहेगा कि रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त हो. ताकि नाटो संधि के कारण उसे जो वहां गंवाना पड़ रहा है, वह रुक जाए. हालांकि यूक्रेन अभी नाटो में नहीं है पर रूस से लड़ रहा है, इसलिए अमेरिका उसकी मदद कर रहा है. गाजा पर युद्ध विराम हो ही गया है. इसलिए संभावना इसी बात की है कि ट्रंप बोलेंगे तो बहुत पर अमल बिल्कुल नहीं करेंगे.

बादशाहत को खतरा

अमेरिका की बादशाहत अब खतरे में है. चीन उसको मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर, फार्मा सेक्टर और टेक्नोलॉजी में लगातार पीछे धकेलता जा रहा है. प्रति व्यक्ति आमदनी में भी वह पीछे है और उसका पासपोर्ट भी टॉप टेन में नहीं है. ऊपर से महंगाई बेलगाम है और अवैध प्रवासी उस पर बोझ बने हुए हैं.

अमेरिकी घबरा रहे हैं. इसी घबराहट को दूर करने के लिए डोनाल्ड ट्रंप ने ग्रेट, ग्रेट ग्रेट अमेरिका! का दांव चला है. वह WHO और पेरिस समझौते से इसलिए हटा है क्योंकि अब वह दुनिया भर में विनाशकारी ड्रिलिंग और उत्खनन करवाएगा. तेल के लिए वह ग्रीनलैंड व अलास्का में खुदाई करवा कर विश्व पर्यावरण पर संकट पहुंचाएगा. अमेरिका जिस संकट के मुकाम पर आ पहुंचा है, उससे उबरने के लिए उसे अब दुनिया की खुशहाली की चिंता नहीं. उसे सिर्फ अमेरिका के उद्यमियों का हित पूरा करना है.

ये लेखक के अपने विचार हैं

साभार टीवी 9 भारतवर्ष से साभार

बदलने लगी है कुंभ की प्रवृति

धरोहर

विमल मिश्र
वरिष्ठ पत्रकार
साहित्यकार

एक खांटी प्रफेशनल के नजरिए के बजाय मेरे कैमरे के लेंस ने कुंभ को मोटे तौर पर आस्था भावनात्मक नजरों से ही निहारा। अब इसे एक पर्यटक की नजरों से देखता हूं तो पाता हूं कुंभ की मूल प्रवृति बदलने लगी है। इसके पुराने चरित्र को कायम रखा जाना चाहिए।

मुम्बई के चीफ इन्कम टैक्स कमिश्नर रह चुके 'पद्मश्री' प्रकाश दुबे आठ वर्ष की उम्र से हर कुंभ की यात्रा करते रहे हैं। उनकी कॉफी टेबल बुक The Mahakumbh Of Prayag में इस आयोजन की मनभावन छटा है। देश-दुनिया घूमने के बाद बनी उनकी अलबमनुमा किताबों के चित्रों को डाक विभाग ने अपनी डाक टिकटों और फर्स्ट डे कवर्स में जगह नवाजी है, हाउस आफ लॉर्ड्स जैसी जगहों पर

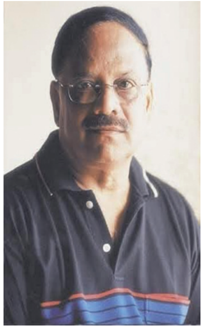

उनके Birds Of India और Indian Wildflowers सरीखे संग्रहों के विमोचन हुए हैं, कोडक जैसी कंपनी ने उन्हें पोस्टरों और कैलेंडरों में व National Geography सरीखी पत्रिका ने अपने पृष्ठों पर छापा है और फुजी जैसी फिल्म कंपनियों ने उन्हें अपना ब्रैंड अंबेसडर बनाया है। उन्होंने कुंभ जैसे महाआयोजनों के दौरान फोटोग्राफिक चुनौतियों के बारे में बातें कीं।

कुंभ में साफ-सफाई, व्यवस्था से लेकर इंफ्रास्ट्रक्चर और भीड़ प्रबंध-सब कुछ चुनौतीपूर्ण है। महाकुंभ में फ्रांस से आए कुछ टाउन प्लॉनर्स से मुलाकात याद आ रही है इस बात को लेकर जिनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं था कि करोड़ों की भागीदारी वाला ऐसा आयोजन अपराधों और बड़ी अव्यवस्था से मुक्त कैसे है और किस तरह बालू पर बसने वाला पूरा शहर बसाया और उजाड़ा जा सकता है ! कुंभ बहुत कुछ सिखाने वाला और बिलकुल अलग, दिव्य प्रकार का अनुभव है। फोटोग्राफी की नजर से तो बहुत खास। ऐसे आयोजनों में आकर फोटोग्राफर्स का बहक जाना स्वाभाविक है। मसलन, विदेशी छायाकार को अमूमन सेंसेशन, न्यूड या वियर्ड फ्रेम की तलाश होती है और फोटो जर्नलिस्ट को स्कूप की। एक खांटी प्रफेशनल के नजरिए के बजाय मेरे कैमरे के लेंस ने कुंभ को मोटे तौर पर आस्था भावनात्मक नजरों से ही निहारा। अब इसे एक पर्यटक की नजरों से देखता हूं तो पाता हूं कुंभ की मूल प्रवृति बदलने लगी है। इसके पुराने चरित्र को कायम रखा जाना चाहिए।

विश्वास का चुंबक

महाराष्ट्र सरकार के कई पद संभाल चुके वरिष्ठ आईएएस अधिकारी गोविंद स्वरूप साहित्य सुधी,

कवि, संगीत रसिक और चैतन्य संस्कृतिकर्मी होने के साथ जीवन के विभिन्न रंगों के चितेरे फोटोग्राफर भी हैं। उन्होंने सभी कुंभ आयोजनों को कैमरे की आंखों से देखा। इन्हीं चित्रों से सजी है उनकी कॉफी टेबलबुक Nashik Kumbh Mela: A Spiritual Sojourn। उन्होंने सुनाए अपने अनुभव।

विश्व का विशालतम आयोजन सकुशल और निर्विघ्न होना, उसमें बिना किसी निमंत्रण या विज्ञापन के लाखों-करोड़ों का जुट जाना, भीषण असुविधाओं के बीच भी अविचल लोग और घोर कोलाहल में भी शांति की प्रतीति। गुरू, तांत्रिक, साधु, श्रद्धालु, आध्यात्मिक लोग-कौन नहीं था यहां। कुंभ को केवल धार्मिक जमावड़े की नजर से देखना ठीक नहीं है। कुंभ का सबसे बड़ा चुंबक है आस्था। कुंभ दिव्य आध्यात्मिक अनुभव है जो मन के अहंभाव को खत्म करता है और समरूप और समरस कर देता है। फोटोग्राफर हो या कोई और - इस अनुभूति की कोई तुलना नहीं है। यह कविता इन्हीं भावों के बीच लिखी हुई हैः 'निकला था भीड़ को कैद करने, सफर में ही शीशा पिघलने लगा। अदृश्य होने लगी अराजकता, कीचड़ भरी गलियां, कहां गया अंधविश्वास .. दिखने लगी एक डोर असीम शक्ति की, सदियों का सार-क्या बेमतलब है? कुंभ में भरी है आस्था, और दब गया है अहम्।'

खुलने वाला है शिगिर आइडल का रहस्य

●ध्रुव कुमार

दुनिया की अबतक की सबसे प्राचीन और रहस्यमयी लकड़ी की बनी मूर्ति 'शिगिर आइडल' और उसपर दर्ज संदेश के बारे में दुनिया भर के लोगों की जिज्ञासा बनी हुई है।शोधकर्ताओं द्वारा इस रहस्य के जल्द ही उदघाटन की घोषणा के बाद यह जिज्ञासा चरम पर पहुंच गई है। यह रहस्यमयी मूर्ति लगभग सवा सौ साल पहले साइबेरियाई पीट बोग के शिगिर में टूटी हालत में मिली थी। मूर्तिकारों ने जोड़कर इसे लगभग अपने मूलरूप में खड़ा किया। मूर्ति की वास्तविक ऊंचाई साढ़े सत्रह फीट थी, जो टूट जाने के बाद नौ फीट से कुछ ही ज्यादा रह गई है। रेडियोकार्बन डेटिंग से मूर्ति की उम्र साढ़े ग्यारह हज़ार वर्षों से ज्यादा पाई गई। लकड़ी से बनी कोई मूर्ति इतने अरसे तक बची रह सकती है, यह अपने आप में आश्चर्य है। उसकी उम्र मिस्र के पिरामिड या ब्रिटेन के स्टोनहेज से भी दोगुनी है। लार्च वृक्ष से बनी इस नक्काशीदार मूर्ति के चेहरे में आंखें, नाक और मुंह तो है, लेकिन शरीर के नीचे का हिस्सा सपाट और आयताकार है। मूर्ति में मुख्य चेहरे के अतिरिक्त अलग-अलग कोणों से देखने पर इसके सात और चेहरे भी दिखते हैं। उनमें से एक

चेहरा तो आश्चर्यजनक रूप से थ्री डायमेंशनल है। मूर्ति को रूस के येसटेरिनबर्ग के म्यूजियम में प्रदर्शन के लिए रखा गया है। 'शिगीर आइडल' के नाम से प्रसिद्द इस मूर्ति के हर तरफ अज्ञात लिपि में कुछ शब्द और कुछ ज्यामितीय चिन्ह खुदे हुए हैं जिन्हें आजतक नहीं पढ़ा जा सका है। शोधकर्ताओं के एक वर्ग का कहना रहा है कि ये हमारे प्राचीन पुरखों के संदेश हो सकते हैं। परग्रही विज्ञानी मानते हैं कि अत्याधुनिक तकनीक से ऐसी मूर्ति का निर्माण प्रस्तर युग के लोगों के द्वारा संभव नहीं है। यह एलियंस की रचना हो सकती है जिन्होंने मूर्ति पर अपनी भाषा में बाद में आने वाले एलियंस या हमारे लिए कोई संदेश लिख छोड़ा है। अभी-अभी जर्मनी के विशेषज्ञों के एक दल ने इस लिपि को लगभग पढ़ लेने का दावा करते हुए बताया है कि इस रहस्यमय प्राचीन मूर्ति के रहस्य की तह तक पहुंचना उनके लिए एक सपने के सच होने जैसा है। अब पूरी दुनिया को शिगिर आइडल और उसपर दर्ज अज्ञात लिपि के खुलासे की प्रतीक्षा है। क्या पता इससे हमारी ही तरह ब्रह्मांड में मौजूद किसी और दुनिया के रहस्य से पर्दा उठ जाय।

नेशनल रेलवे वर्कर्स यूनियन के अधिवेशन में उभरी केंद्र सरकार और रेलवे के प्रति नाराजगी

भारतीय रेल कर्मचारियों की सबसे बुलंद आवाज़ नेशनल रेलवे वर्कर्स यूनियन है, जो एक ऐतिहासिक जुझारू श्रमिक आंदोलन और संगठन है। अपने वर्षगांठ वर्ष की ओर बढ़ रहे इस श्रमिक संगठन का दो दिवसीय सम्मेलन हाल ही में मुंबई में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में देश भर से लाखों श्रमिकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी, जिसकी अध्यक्षता रेलवे कर्मचारियों के मसीहा और जुझारू नेता वेणु नायर ने की. इस अवसर पर संगठन की सफल प्रगति की समीक्षा की गयी तथा आगे की दिशा पर चर्चा की गयी. ठेकेदार के रूप में काम कर रही केंद्र सरकार और मजदूरों के हितों के प्रति उदासीन रेलवे प्रशासन की कड़ी आलोचना की गई।

आज रेलवे में सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील विभाग इंजीनियरिंग, सिग्नलिंग, बिजली हैं और इनमें क्लर्क-कर्मचारी की रिक्तियों को भी भरने की जरूरत है, यह सवाल सामने आया है। पर्याप्त श्रमिक न होने के कारण काम का अतिरिक्त बोझ श्रमिकों पर पड़ता है। रेलकर्मी कंगाल हो गये हैं और सरकार व प्रशासन उनका शोषण कर रही है, यह चेतावनी इस दौरान दी गयी. मध्य और कोंकण रेलवे पर इस यूनियन का दबदबा है। इस दौरान कार्यकर्ताओं के मुद्दों पर भी चर्चा की गई. कार्यरत कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया शुरू करने की मांग को लेकर सरकार से बात की जाएगी। यह सुझाव दिया गया कि रेलवे की बंजर भूमि, श्रमिकों की कॉलोनियों, कारखानों, स्कूलों, मैदानों और संपत्ति का उपयोग श्रमिकों के लाभ के लिए और परिणामस्वरूप राष्ट्रीय हित के लिए किया जाना चाहिए।

महाराष्ट्र में सबसे ठीक व्यावसायिक माहौल : लोढ़ा

मुंबई- महाराष्ट्र के कौशल विकास मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने कहा है कि राज्य में उद्योग व्यापार क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार सबसे अच्छा व्यावसायिक और पेशेवर माहौल उपलब्ध करा रही है. मुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़णवीस के दूरदर्शी नेतृत्व में, हमारी सरकार आपके जैसे उद्योगों (रत्न-आभूषण) को समर्थन देने के लिए प्रतिबद्ध है. हम सब मिलकर विकसित और आत्मनिर्भर भारत के सपनों को साकार कर सकते हैं. वे उद्योग दिग्गजों के साथ बीकेसी स्थित जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में दुनिया की सबसे बड़ी रत्न और आभूषण व्यापार प्रदर्शनी 'आईआईजेएस सिग्नेचर-2025' का शुभारंभ में बोल रहे थे। इस अवसर पर पीएनजी ज्वैलर्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक सौरभ गाडगिल, थाई ट्रेड प्रतिनिधि उमेश पांडे, जीजेईपीसी के अध्यक्ष विपुल शाह, उपाध्यक्ष किरीट भंसाली, संयोजक नीरव भंसाली, कार्यकारी निदेशक सब्यसाची रे सहित बड़ी संख्या में रत्न-आभूषण कारोबारी और निर्यातक मौजूद थे।

मराठी उद्यमिता को नया आयाम देने वाले द ग्रैंड मेस्मे एक्सपो आयोजित बिजनेस-जात्रा-2025' का भव्य उद्घाटन समारोह ठाणे के टिप-टॉप में किया गया। यह पहल मराठी युवाओं के बीच उद्यमिता को बढ़ावा देने और महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को नए अवसर प्रदान करने के लिए लागू की गई है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन उद्योग मंत्री उदय सामंत और स्थानीय शिवसेना सांसद नरेश गणपत म्हस्के ने किया इस अवसर पर द ग्रैंड मेस्मे एक्सपो के आयोजकों के साथ ठाणे मनपा शिक्षण समिति के चैयरमेन पूर्व नगरसेवक योगेश जानकर, पूर्व नगरसेवक विकास कृष्णा रेपाले आदि

पनवेल भूमिपुत्र के जननेता रहे स्वर्गीय डी.बी.पाटिल की जयंती के अवसर पर स्थानीय भाजपा विधायक प्रशांत रामशेठ ठाकुर ने उनके आवास पर श्री पाटिल को श्रद्धांजलि अर्पित की, इस अवसर पर श्री पाटिल के परिवार के सदस्य डी.बी.पाटिल आदि

उत्तरांचल मित्र मंडल वसई का श्रीमद्भागवत महायज्ञ 9 फरवरी से शुरू

मुंबई के उत्तराखंडी समाज की ,हर क्षेत्र में सबसे अधिक सक्रिय भागीदारी निभाने वाली संस्था उत्तरांचल मित्र मंडल वसई (रजि) आयोजित 11 वां श्रीमद् भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ रविवार 9 फरवरी से भव्य शोभायात्रा उत्तराखंड की आराध्य देवी मां नंदा देवी डोली क्लश यात्रा से शुभारंभ होगा यह यात्रा सुबह 9 बजे से प्रारंभ श्री स्वामीनारायण मंदिर से श्री बदरीनाथ मंदिर परिसर तक लाई जायेगी श्रीमद्भागवत कथा व्यास पूज्य दीपक जोशी जी (श्रीधाम वृन्दावन) के मुखारविंद से कथा सुनने को मिलेगी।इस महायज्ञ में समाज के बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार भी किया जायेगा वसई श्री बदरीनाथ मंदिर परिसर, 100 फीट रोड, सनसिटी (प.), में यह महायज्ञ आयोजित है श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ 16फरवरी तक चलेगा इस बारे में अधिक जानकारी मनोहर रौथाण 9920805594 या आचार्य हरीश चंद्र लखेड़ा 9004013983 पर मिलेगी।

हिमालयीन हेल्थ एजुकेशनल वेलफेयर ट्रस्ट के सांस्कृतिक कार्यक्रम में झूमे उत्तराखंडी

बोईसर पालघर के उत्तराखंड समाज की जागरूक सामाजिक संस्था हिमालयीन हेल्थ एंड एजुकेशनल वेलफेयर ट्रस्ट (बोईसर) का सांस्कृतिक कार्यक्रम टीमा ग्राउंड, टीमा हॉल, एमआईडीसी में बड़ी भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित अध्यक्ष पी एस पटवाल , महासचिव के सी पांडे ने की। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक विलास तरे नहीं पहुंच पाए उनके प्रतिनिधि के रूप में नीलम शंखे ने उनका संदेश पढ़कर सुनाया। उन्होंने कहा बोईसर पालघर क्षेत्र में उत्तराखंड के लोग पूरी इमानदारी और सबसे मिलजुल कर रहते हैं समाज को आगे लाने के लिए संस्था बहुत सारे उपक्रम चलाती रहती है। रक्तदान शिविर, हेल्थ कैंप और शिक्षा के लिए काम करने वाली संस्था सांस्कृतिक सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में अपने लोगों को जोड़ने का काम कर रही है और संस्थाओं को भी इनसे सीख लेने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम को रिकॉर्ड डांस प्रतियोगिता (एकल एवं युगल) सिर्फ उत्तराखंडी गीतों पर रखा गया था। बडी तादाद में महिलाएं पुरुषों उत्तराखंडी परिधान में सांस्कृतिक संध्या में मौजूद रहे। संस्था के महासचिव कैलाश पांडेय ने बताया कि ट्रस्ट ने बोइसर में एक OPD खोला हैं जिसमें मात्र ५० रुपए में दवाई और जाँच होती हैं। संगीत निर्देशक रामेश्वर गैरोला की धुनों पर गीत संगीत की एक मधुर भव्य उत्तराखंडी उद्घोषक सुरेंद्र भट्ट, लोकगायक सुरेश काला, देवकीनंदन कांडपाल, लोकगायिका प्रतिभा कठैत और मीना कन्सवाल, सरिता पौडेल व मनोज सिंह महर के लोकगीतों पर श्रोताओं ने जमकर डांस किया। अभिनेता अनिल भट्ट व कोरियोग्राफर रेशमा रौथाण ने उपस्थित दर्ज की। संस्था के उपाध्यक्ष अरुण कुमार पांडे, मेहमान कपकोटी, महासचिव कैलाश पांडेय, बहादुर गुसाईं, प्रमोद रावत,डी एस बगडवाल, अमित रावत,बालम टांगनिया की टीम ने अतिथियों का सत्कार किया।

समुद्र में चीन की दादागीरी रोकेंगे भारत के परिष्कृत युद्धपोत

हिंद महासागर में चीन जिस तरह से अपना दबदबा बनाता जा रहा है, उससे निपटने के लिए भारत ने अब पुख्ता उपाय करने का फैसला कर लिया है और उसी का नतीजा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मुंबई के नौसेना डॉकयार्ड में नौसेना के दो अग्रणी युद्धपोतों आईएनएस सूरत और आईएनएस नीलगिरि तथा पनडुब्बी आईएनएस वाघशीर को राष्ट्र को समर्पित करेंगे. इनमें आईएनएस सूरत पी15बी गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रॉयर परियोजना का चौथा और अंतिम युद्धपोत है, जो दुनिया के सबसे बड़े और सबसे परिष्कृत विध्वंसक युद्धपोतों में से एक है. इसमें 75 प्रतिशत स्वदेशी सामग्री है और यह अत्याधुनिक हथियार-सेंसर पैकेज और उन्नत नेटवर्क-केंद्रित क्षमताओं से लैस है. जबकि पी17ए स्टील्थ फ्रिगेट परियोजना का पहला युद्धपोत आईएनएस नीलगिरि, भारतीय नौसेना के युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजाइन किया गया है. और इसे बढ़ी हुई क्षमता, समुद्र में लंबे समय तक रहने तथा स्टील्थयुक्त उन्नत सुविधाओं के साथ नौसेना में शामिल किया गया है. यह स्वदेशी फ्रिगेट की अगली पीढ़ी को दर्शाता है. इसके अलावा पी75का चौथा और अंतिम युद्धपोत है, जो दुनिया के सबसे बड़े और सबसे परिष्कृत विध्वंसक युद्धपोतों में से एक है. और इसे बढ़ी हुई क्षमता, समुद्र में लंबे समय

तक रहने तथा स्टील्थयुक्त उन्नत सुविधाओं के साथ नौसेना में शामिल किया गया है. यह स्वदेशी फ्रिगेट की अगली पीढ़ी को दर्शाता है. इसके अलावा पी75 स्कॉर्पीन परियोजना की छठी और अंतिम पनडुब्बी आईएनएस वाघशीर पनडुब्बी निर्माण में भारत की बढ़ती विशेषज्ञता का प्रतिनिधित्व करती है और इसका निर्माण फ्रांस के नौसेना समूह के सहयोग से किया गया है. पिछले कुछ दशकों में चीन ने तेजी से अपनी नौसैनिक क्षमताओं का आधुनिकीकरण किया है और चीनी नौसेना ने विमान वाहक जहाजों, सतही युद्धपोतों और सैन्य पनडुब्बियों को बड़ी संख्या में अपने बेड़ों में शामिल किया है. अपने इस अवसरवादी पड़ोसी की विस्तारवादी नीतियों को देखते हुए भारत के लिए चिंता पैदा होना स्वाभाविक है. यही नहीं बल्कि चीन की जासूसी की कोशिशें भी उसकी मंशा के बारे में शक पैदा करती हैं और उसके जासूसी जहाजों को भारत, जापान तथा श्रीलंका जैसे देशों के समुद्री इलाकों में घूमते देखा गया है. वर्ष 2022 में युआन वांगड नामक चीनी नौसैनिक जहाज श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह पहुंचा और करीब एक हफ्ते तक वहां मौजूद रहा था. उस वक्त चीन ने कहा था कि समुद्री वैज्ञानिक अनुसंधान से जुड़े काम ये जहाज करता है, लेकिन भारत में उसी समय ये कहा गया था कि कि ये एक जासूसी जहाज है, जिसका काम दूसरे देशों की जासूसी करना है. अभी कुछ माह पहले ही चीन की नवनिर्मित परमाणु पनडुब्बी समुद्र में डूब गई, जिसे कुछ दिन पहले ही चीनी नौसेना में शामिल किया गया था. चीन ने इस घटना को छिपाने की कोशिश की थी, लेकिन सैटेलाइट तस्वीरों से इसका खुलासा हो गया. इसलिए भारत ने हिंद महासागर में जिस तरह से अपनी नौसेना को मजबूत करने का फैसला किया है उससे निश्चित रूप से समुद्री क्षेत्र में चीन की दादागीरी पर अंकुश लगेगा.

तर्पण फाउंडेशन का कार्य सराहनीय

अनाथालयों और बालगृहों से बाहर निकले अनाथ बच्चों के लिए काम करने वाली संस्था तर्पण फाउंडेशन, युवाओं की अद्वितीय उपलब्धियों और योगदानों को सम्मानित करने के लिए हर साल 'तर्पण युवा पुरस्कार' का आयोजन करती है. इस साल आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधान परिषद के सभापति राम शिंदे, महिला एवं बाल विकास विभाग की कैबिनेट मंत्री अदिति तटकरे, विधान परिषद के विधायक एवं तर्पण फाउंडेशन के संस्थापक श्रीकांत भारतीय समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे. विशेष अतिथि के रूप में वॉकहार्ट लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक डॉ. हुजैफा खोराकीवाला कोहिनूर समूह के संस्थापक और अध्यक्ष कृष्ण कुमार गोयल और इस्कॉन के प्रवक्ता नित्यानंद चरणदास उपस्थित थे. इस कार्यक्रम में सनाथ वेलफेयर फाउंडेशन की संस्थापक गायत्री पाठक, स्नेहवन संस्था के संस्थापक अशोक देशमाने और श्री संस्कार मानसिक दिव्यांग बालिका छात्रावास की अध्यक्ष मंगलताई वाघ को विधान परिषद के सभापति राम शिंदे और मंत्री अदिति तटकरे के हाथों तर्पण युवा पुरस्कार से बालकों और अतिथियों को सम्मानित किया गया.

NARENDRA PLASTIC

Our mission is to offer a ONE STOP shop for all packing needs at the BEST PRICES with no compromise on QUALITY.

enviro bag

Narendra Plastic Private Limited, established in 1975, is India's leading manufacturer and exporter of compostable and other plastic bags with production of 24,000 tons. The Government of India has acknowledged the Group as a 'Star Trading House' and the 'Highest Exporter Award' since last 20 years due to its relentless pursuit for quality, extensive exports and fair-trade practices.

About Compostable Materials

- Compostable bio-degradable materials are environmentally sustainable alternative to conventional plastics.
- Products made from bio-degradable compostable break down and decompose completely within a short time frame contributing to a safer, cleaner and healthier environment.
- In addition, these products turn into compost after break down and provide the earth with nutrients for plant growth.
- Bags made of compostable material have already been successfully introduced and are accepted worldwide.

Product Range

- We produce various products made of compostable materials like shopping bags, garbage bags, produce bags, etc.
- These products are used in sectors like household garbage, agriculture, horticulture, hospitals, hotels, retail, aviation etc.
- Available in various size, thickness and colour.
- Our compostable bags are complaint to IS/ISO 17088 standards and certified by Central Pollution Control Board and as per European EN 13432 and American ASTM D 6400 norms.

CERTIFIED

Certified by: Central Pollution Control Board (CPCB)

OK compost

TÜV AUSTRIA

Corporate Office:
3, Vakil Industrial Estate,
Walbhat Road, Goregaon East,
Mumbai – 400 063, India

Factory:
Survey No. 436/1-2, Village Dabhel,
Daman 396210

"Satisfaction of our valued customers is our reward"

Marketed & Distributed By:
relogix Distribution Pvt .Ltd .

Email: info@narendrabags.com
info@relogix.in
Tel: +91-22-42525252
Website: www.narendrabags.com
www.relogix.in

COMPOSTABLE

पुष्प प्रदर्शनी 31जनवरी से 2फरवरी

मुंबई नगर निगम के उद्यान विभाग द्वारा पिछले 28 वर्षों से लगातार बागवानी प्रदर्शनी और कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष 31जनवरी से 2फरवरी तक भायखला के रानी बाग यानी वीर जीजामाता भोंसले पार्क में पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। वहीं 7 फरवरी से 8 फरवरी को दो दिवसीय बागवानी कार्यशाला का आयोजन किया गया है। नवी मुंबई पालघर जैसे शहरों से बागवानी और बागवानी में विशेष रुचि रखने वाले लोग इस पुष्प प्रदर्शनी में अवश्य आते हैं। इस प्रदर्शनी में विभिन्न प्रकार के फूलों उनके संरक्षण और देखभाल के बारे में जानकारी दी जाती है। इसके अलावा, सब्जियों, फलों, पेड़ – पौधों और जड़ी-बूटियों की खेती, उनकी कटाई-छंटाई और उर्वरकों के उपयोग के संदर्भ में एक बुनियादी मार्गदर्शन कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इस कार्यशाला में भाग लेने वाले उम्मीदवारों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाता है उद्यान अधीक्षक जीतेन्द्र परदेशी के कार्यकाल

के दौरान, इस विभाग ने उत्कृष्ट प्रदर्शन हासिल किया है और जापानी तकनीक पर आधारित पार्क विकास और पर्यावरण संवर्धन गतिविधियों मियावाकी को भी परदेशी के नेतृत्व में सफलता मिली. उद्यान उपाधीक्षक मुंढे, साहेबराव गावित, अतरदे, वारिसे, राठोड, गोसावी के मार्गदर्शन में तथा उद्यान विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों और मालियों के सहयोग से कई जनकल्याणकारी गतिविधियां सफलतापूर्वक क्रियान्वित की गई हैं। इस प्रदर्शनी में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य व्यक्तियों के साथ-साथ सिने जगत की मशहूर हस्तियाँ भी आती हैं। कृषि विशेषज्ञों का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन यहां मिलेगा। बाग़ बगीचे एवं बागवानी कार्यशाला में भाग लेने के लिए 1000 का शुल्क निर्धारित किया गया है । इस विषय पर अधिक जानकारी निम्नलिखित नंबर पर मिलेगी । अमित करंदीकर–9321636622 प्रतिभा ठाकरे – 8692030699 एवं उद्यान अधीक्षक कार्यालय ने अविनाश जाधव – 8291412122 से संपर्क करने की अपील की है।

मनको विशुद्ध करो

तुम अपने मनमें निश्चय करो कि मैं सदा-सर्वदा भगवान् की संरक्षकतामें हूँ। भगवान् कभी भी मुझको अकेला नहीं छोड़ते, वे निरन्तर मेरे बाहर-भीतर सर्वत्र विराजित रहते हैं। भगवान् की इस नित्यसन्निधिके प्रभावसे पाप ताप मेरे पास आ ही नहीं सकते। काम-क्रोधादिका प्रवेश मेरे मनमें कभी हो ही नहीं सकता। मैं नित्य शुद्ध हूँ, निष्पाप हूँ, दूर्विचार और दुर्गुणोंसे सर्वथा रहित हूँ, मन तथा शरीरसे निरोग एवं बलवान् हूँ और नित्य आनन्दको प्राप्त हूँ। इस प्रकारकी धारणा बारम्बार करते रहो। कुछ ही समयमें देखोगे - तुम वास्तवमें ऐसे ही बनते जा रहे हो।

– परम पूज्य "भाईजी"
श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

युवाओं के लिए प्रेरणा बनी नैना

भारत में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, और नैना जायसवाल इसका बेहतरीन उदाहरण हैं। महज 8 साल की उम्र में 10वीं पास करने वाली नैना ने 13 की उम्र में मास कम्युनिकेशन में ग्रेजुएशन पूरा कर लिया। 15 साल में वह एशिया की सबसे कम उम्र की पोस्टग्रेजुएट बन गईं। 17 की उम्र में PhD शुरू कर, 22 साल की उम्र में वह भारत की सबसे युवा महिला PhD धारक बनीं। नैना का शोध "माइक्रोफाइनेंस से महिला सशक्तिकरण" पर आधारित था। पढ़ाई के साथ-साथ नैना एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की टेबल टेनिस खिलाड़ी भी हैं। होमस्कूलिंग की मदद से उन्होंने पढ़ाई और खेल दोनों में संतुलन बनाया। नैना की कहानी साबित करती है कि मेहनत और लगन से उम्र की हर सीमा को पार किया जा सकता है। यह हर युवा के लिए प्रेरणा है।

● प्रभात पंत

भारत-ब्राजील कृषि सहयोगः वैश्विक खाद्य सुरक्षा की नई इबारत

(हाल की शासकीय ब्राजील कृषि-अध्ययन यात्रा के अनुभव के आधार पर)

ब्राजील और भारत हैं नैसर्गिक-मित्र और स्वाभाविक साझेदार

भारत और ब्राजील दोनों मिलकर भर सकते हैं पूरी दुनिया का पेट

धरती के दो छोरों पर बसे होने के बावजूद भारत और ब्राजील में अद्भुत समानताएं

डॉ राजाराम त्रिपाठी
राष्ट्रीय संयोजकः अखिल भारतीय किसान महासंघ (आईफा)

साझे प्रयासों से हर क्षेत्र में हरियाली संभव है। यह उक्ति भारत और ब्राजील जैसे दो कृषि-प्रधान देशों के लिए विशेष रूप से सटीक बैठती है। हाल ही में मुझे ब्राजील देश

के सरकारी निमंत्रण पर ब्राजील की कृषि यात्रा का अवसर मिला, जहां मैंने उनकी उन्नत कृषि तकनीकों, प्रयोगशालाओं और खेतों पर खड़ी शानदार फसलों को देखा। कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण की बड़ी इकाइयों का भ्रमण किया। किसानों और इंब्रापा के कृषि विशेषज्ञों से चर्चा, उनके सहकारी प्रयासों का अध्ययन किया, और ब्राजील के कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों एवं भारत के राजदूत से संवाद ने कृषि ज्ञान तथा मेरे दृष्टिकोण को और समृद्ध किया। कृषि अध्ययन टूर का यह 11 दिवसीय आयोजन ब्राजील सरकार के अपेक्स-ब्राज़ील की पहल पर किया गया था और इसमें श्री डोमिनिक कृषि-जागरण, ध्रुविका सोढ़ी तथा ब्राजील दूतावास समूह तथा श्री डोमिनिक का भी विशेष योग रहा। इस यात्रा में मेरे सहयात्री वरिष्ठ पत्रकार संदीप दास, मनीष गुप्ता, चंद्रशेखर ,कृषि उद्यमी रत्नम्मा भी शामिल रहे। अपेक्स ब्राजील के अनिरुद्ध शर्मा, एंजेलो मारिसिओ ,एड्रिआना, पॉउला सोआरेस, डेब्रा फेइटोसा,, डाला कालीगारो,फिलिपे आदि अधिकारियों का इस ऐतिहासिक ब्राज़ील कृषि-भ्रमण कार्यक्रम को सर्वविध सफल बनाने में विशेष योगदान रहा है।*

ब्राजील का क्षेत्रफल भारत से लगभग ढाई गुना है जबकि जनसंख्या बहुत कम है। पृथ्वी के दो अलग-अलग छोर पर बसे होने के बावजूद, ब्राजील में मैंने भारतीयों के प्रति सर्वत्र मित्रता तथा सौहार्द का

भारत और ब्राजील की कृषिः तुलनात्मक दृष्टि

भारत :- कृषि प्रधान देशः लगभग 50% जनसंख्या कृषि पर निर्भर। प्रमुख फसलेंः चावल, गेहूं, गन्ना, दलहन, तिलहन, और मसाले।
पशुधनः भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक है।
2024 के आंकड़ेः भारत ने 51 अरब डॉलर का कृषि निर्यात किया।
चुनौतियांः मानसून पर निर्भरता और छोटे किसानों की सीमित संसाधन क्षमता।

ब्राजीलः-
वैश्विक कृषि निर्यातकः कृषि क्षेत्र का 25% योगदान।
प्रमुख फसलेंः सोयाबीन, कॉफी, गन्ना, मक्का, और संतरे।
पशुधनः ब्राजील विश्व का प्रमुख मांस निर्यातक है।
2024 के आंकड़ेः कृषि निर्यात 150 अरब डॉलर के पार।
विशेषताः प्रभावी कृषि शोध, सहकारिता आधारित बड़े फार्म, मशीनीकरण, और इथेनॉल उत्पादन में अग्रणी।

भाव पाया जो कि एक उत्साहवर्धक स्थित है। भारत और ब्राजील, दोनों देश कृषि उत्पादन में अग्रणी हैं। इनकी समानताएं और विशिष्टताएं इस बात का संकेत देती हैं कि यदि ये परस्पर सहयोग करें, तो दोनों देशों की कृषि को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है।

ब्राजील कृषि-यात्रा से सीखे गए सबक :-

ब्राजील की प्रयोगशालाओं में उन्नत बीजों, पौधों तकनीकों का तीव्र विकास हुआ है,पर उससे भी बड़ी बात यह है कि वह सारे उन्नत बीज और नई तकनीकें उनके अधिकांश खेतों तक पहुंच गई हैं। बड किसानों द्वारा उन्नत बीजों तथा नई तकनीकों का खेतों पर व्यापक प्रयोग देखकर यह स्पष्ट हुआ कि भारत भी अपने किसानों को इन्हीं तकनीकों से

सशक्त बना सकता है । इसके लिए हमें अपने प्रयोगशालाओं तथा किसानों और खेतों की बीच की खाई को पाटना होगा।

उनकी सफल सहकारिता, मशीनीकरण और स्मार्ट तकनीकों का उपयोग प्रेरणादायक था। वहीं, भारत की जैविक खेती,उच्च लाभदायक मेडिसिनल और एरोमेटिक प्लांट्स, हर्बल्स, स्टीविया एवं काली मिर्च जैसी उच्च लाभदायक फसलों की खेती तथा बहुस्तरीय खेती के ज्ञान एवं विशेष रूप पाली हाउस के विकल्प के रूप में वृक्षारोपण द्वारा बनाए गए 'नेचुरल ग्रीनहाउस' ने ब्राजील के विशेषज्ञों में विशेष रुचि पैदा की।

सहयोग के संभावित क्षेत्र:-

1. पशुधन प्रबंधनः ब्राजील ने भारत की गीर जैसी देसी नस्लों की गायों का आयात करके उन पर काफी शोध कार्य करते हुए उनकी और भी नई प्रजातियों का विकास किया है। वहां की संस्था 'एबीसीजेड' का गीर नस्ल की गायों पर किया गया कार्य उल्लेखनीय है।

ब्राजील का पशुधन प्रबंधन और मांस उत्पादन तकनीक भारत के लिए उपयोगी हो सकती है। वहीं, भारत ब्राजील को दुग्ध-उत्पादन के क्षेत्र में सहयोग दे सकता है।

2. कपास और गन्ना:

ब्राजील गन्ने से इथेनॉल उत्पादन में अग्रणी है।

भारत, अपने गन्ना उत्पादकों को इस तकनीक से जोड़कर ऊर्जा उत्पादन बढ़ा सकता है।

भारत के कपास उगाने वाले किसान इन दिनों कई तरह की कठिनाइयों से जूझ रहे हैं । इन किसानों को ब्राजील के बड़े पैमाने पर कपास उत्पादन की लाभकारी तकनीकों से फायदा मिल सकता है।

3. सोयाबीन और दलहन:

ब्राजील की सोयाबीन तथा अन्य बीन्स उत्पादन तकनीक भारत के पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों में संभावनाएं खोल सकती है। देखनी है कि ब्राजील तुअर यानी अरहर की खेती विशेष रूप से भारत के लिए ही करता है और वहां अरहर का उत्पादन भारत के उत्पादन से लगभग ढाई गुना तक है। प्रोटीन के लिए मुख्य रूप से दालों पर निर्भर भारत जैसे शाकाहारी देश के लिए बींस तथा दलों के क्षेत्र में ब्राजील के साथ हर स्तर पर सहयोग लाभकारी होगा। अधिकारियों से चर्चाः कृषि मंत्री और सहकारिता विभाग के अधिकारियों ने भारत के साथ दीर्घकालिक सहयोग की रुचि व्यक्त की।

राजदूत से संवादः भारत के सफल राजदूत सुरेश रेड्डी ने अपने लगभग 4 साल की कार्यकाल में दोनों देशों के बीच कृषि व्यापार को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। और भी कई ठोस कदमों की आवश्यकता के साथ ही उन्होंने माना कि दोनों देशों को अपने देश के प्रगतिशील किसानों के दलों को एक दूसरे के यहां 'कृषि स्टडी टूर' पर नियमित रूप से भेजा जाना चाहिए।

चुनौतियां और समाधान-

1. भाषा और सांस्कृतिक भिन्नताः नियमित संवाद और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से दूरी कम की जा सकती है।
2. तकनीकी लागतः भारत में स्थानीय परंपरागत तकनीकों का विकास कर इसे सस्ता बनाया जा सकता है।
3. नीतिगत अंतरः जी -20 , ब्रिक्स के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय समझौतों और व्यापारिक गठबंधनों से इस अंतर को कम किया जा सकता है।

भारत और ब्राजील, कृषि क्षेत्र में परस्पर सहयोग से न केवल अपनी अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत बना सकते हैं, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। मेरी इस यात्रा का अनुभव यह दिखाता है कि दोनों देशों के पास एक-दूसरे से सीखने और सिखाने की अपार संभावनाएं हैं। अंत में, कहा गया है कि "जहां चाह, वहां राह।" दोनों देशों के बीच यह सहयोग वैश्विक कृषि का भविष्य बदल सकता है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत और ब्राजील दोनों मिलकर पूरे विश्व का पेट भर सकते हैं। इसलिए भारत और ब्राजील एक नैसर्गिक मित्र तथा स्वाभाविक साझेदार हैं। जरूरत है इस साझेदारी एवं मित्रता के पौधे के विकास हेतु इसे समय-समय पर नियमित रूप से खाद-पानी देते रहने की, और यह जिम्मेदारी दोनों देश दूतावासों को, सरकारों को तथा दोनों देशों की जनता को मिलजुल कर एकजुटता के साथ निभानी चाहिए ।

4. जैव ऊर्जा :

ब्राजील का इथेनॉल और जैव ईंधन उत्पादन, भारत के ऊर्जा क्षेत्र में क्रांति ला सकता है।

वहीं भारत की पारंपरिक टिकाऊ तथा पर्यावरण हितैषी कृषि विधियां ब्राजील को सतत विकास में सहयोग दे सकती है।

सहयोग के लाभ :-

1. आर्थिक उन्नति :- कृषि व्यापार बढ़ने से दोनों देशों की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी।
2. खाद्य सुरक्षा :- फसल उत्पादन और विविधता में वृद्धि से खाद्य सुरक्षा मजबूत होगी।
3. तकनीकी प्रगति :- ब्राजील से मशीनीकरण और तकनीक लाकर भारत अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ा सकता है।
4. वैश्विक नेतृत्व :- संयुक्त अनुसंधान और सहयोग से दोनों देश जलवायु परिवर्तन और खाद्य संकट से निपटने में विश्व का नेतृत्व कर सकते हैं।

ब्राजील यात्रा की उपलब्धियां और अनुभव

किसानों से संवाद : किसानों ने बताया कि कैसे बड़े पैमाने पर खेती और सहकारी संस्थाएं उनके जीवन को बेहतर बना रही हैं।

अखाड़ों में संन्यासियों को नागा बनाने की शुरू हुई प्रक्रिया

गंगा में लगाई 108 डुबकी, महामंडलेश्वर अवधेशानंद ने दी दीक्षा | सात पीढ़ियों-खुद का पिंडदान कर आठसौ बने नागा

1 धर्म दीक्षा

महाकुम्भ नगर, वरिष्ठ संवाददाता। महाकुम्भ में नागा साधुओं की दीक्षा शुरू हो गई है। जूना अखाड़े ने सेक्टर नंबर 21 में शनिवार को आठ सौ नागा साधुओं को धर्म दीक्षा देकर परिवार में शामिल कर लिया। सुबह से आधी रात के बाद तक यह कार्यक्रम चलता रहा। मध्य रात्रि जूना अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि से दीक्षित होकर सभी को प्रमाणपत्र मिला। नागा बनने वाले संन्यासियों को सबसे पहले गंगा स्नान कराया गया फिर गुरु की आज्ञा से सभी का मुंडन संस्कार हुआ। जनेऊ पहनाई गई और एक बार फिर गंगा स्नान कराया गया। एक साथ दर्जनों पुरोहितों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच संन्यासियों का शुद्धिकरण संस्कार कराया। सभी के ऊपर चंदन और हल्दी छिड़का गया। शुद्धिकरण के बाद फिर स्नान करवाया गया। स्नान के उपरांत सभी ने अपनी सात पीढ़ी आगे और सात पीढ़ी पीछे का पिंडदान कर खुद का भी पिंडदान कर नए समाज में शामिल होने का संकल्प लिया। इन्हें एक बार फिर स्नान

करवाया गया।

शाम को अखाड़े की 52 मणियों (जिसमें पुरी, गिरि, सरस्वती सभी शामिल हैं) ने अपने

शिष्यों के सामने अग्नि जलाकर उन्हें पर्चियां सौंपी। किसी में 5100, किसी में 11 हजार तो किसी पथ में 51 हजार रुपये पंजीकरण शुक्ल दर्ज था। दिन ढलने के बाद शुद्धि यज्ञ किया गया। जिसमें अग्निकुंड के सामने संन्यासियों ने तप किया। मध्य रात्रि जूना पीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि के सामने सभी ने धर्म की रक्षा का संकल्प लिया। रात में गंगा जल में 108 दुबकी लगाई। स्वामी अवधेशानंद गिरि के सामने बो परखी गई जिसके बाद सभी को नागा संत बनाया गया।

जूना अखाड़े के अंतरराष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमहंत नारायण गिरि ने बताया कि यह प्रक्रिया वसंत पंचमी तक पांच बार होगी।

बनाया गया है पंडाल

दीक्षा के लिए त्रिवेणी पाहून पुल के बगल में आचार्य महामंडलेश्वर का एक विशाल पंडाल बनाया गया है जिसके भीतर केवल अखाड़े के साधु संतों के प्रवेश की अनुमति है। दीक्षा के वक्त बाहर कोतवालों की कड़ी निगरानी रही।

आज महिला नागा संत लेंगी धर्म की दीक्षा

जूना अखाड़े में रविवार को त्रिवेणी मार्ग पर महिला संतों को धर्म दीक्षा दी जाएगी। एक हजार से अधिक महिलाओं को दीक्षा देने की तैयारी चल रही है।

निरंजनी अखाड़े में भी आज होगा कार्यक्रम

निरंजनी अखाड़े में भी रविवार को नागा सन्यासियों को दीक्षा देने का कार्यक्रम होगा। निरंजनी अखाड़े के सचिव महंत रविद्रपुरी ने बताया कि सभी 52 मंडियों से पर्चियां मंगाई गई है। इस बार चार हजार से अधिक को धर्म दीक्षा दी जाएगी।

सख्त पहरे के बीच हुई दीक्षा

दीक्षा सख्त पहरे के बीच हुई। जब सन्यासियों के मुंडन की प्रक्रिया चल रही थी तो घाट पर देखने वालों की भीड़ लग गई। इस दौरान तमाम लोग इस प्रक्रिया को अपने मोबाइल में कैद करने लगे। जिसके कारण जूना अखाड़े के कोतवालों ने कई बार लोगों को यहां से हटाया। कई बार लोगों से बहस भी हुई।

द्वाराहाट के पंकज जोशी बने गुजरात के मुख्य सचिव

द्वाराहाट के ग्राम मुझोली निवासी पंकज जोशी गुजरात के मुख्य सचिव बनाए गए हैं। वर्ष 1989 बैच के वरिष्ठ आईएएस अधिकारी जोशी को गुजरात शासन के निवर्तमान मुख्य सचिव राजकुमार की सेवानिवृत्ति के बाद यह जिम्मेदारी सौंपी गई है।

रिसोर्स इंजीनियरिंग में एमटेक एवं रक्षा व सामरिक अध्ययन में एमफिल की विशिष्ट शैक्षिक योग्यता रखने वाले पंकज जोशी 1989 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हुए। उनके पिता स्व. हरीश चंद्र जोशी गोविंद बल्लभ पंत कृषि विवि पंतनगर में मेडिसिन विभाग के हेड रहे जबकि माता दया जोशी गृहिणी हैं। वर्तमान में उनका परिवार स्थायी रूप से हल्द्वानी में रहता है।

पराजय की समीक्षा बैठक में पवार का निचोड

अति उत्साह में डूबे संघ ने BJP को जिताया

राकां अध्यक्ष शरद पवार का मानना है कि लोकसभा चुनाव में मिली बड़ी सफलता के बाद पार्टी अति उत्साह में थी. इस वजह से महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में पार्टी की नैया डूब गई. उन्होंने यह भी कहा कि दूसरी तरफ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने बीजेपी के साथ लोगों से संपर्क साधने के लिए बेहतर काम किया. इस वजह से बीजेपी को विधानसभा चुनाव में बड़ी जीत हासिल हुई है लेकिन चुनाव के दौरान हम बेखबर रहे. पवार, गुरुवार को वायबी चव्हाण सेंटर में आयोजित पार्टी की दो दिवसीय समीक्षा बैठक में बोल रहे थे. इस बैठक में पार्टी के सभी सांसद और विधायकों के अलावा प्रमुख पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे. दो दिवसीय बैठक गुरुवार को समाप्त हो गई. पवार ने समीक्षा बैठक के निचोड़ में कहा कि अगर हमें निकाय चुनाव में बेहतर नतीजे हासिल करने हैं तो आरएसएस की तर्ज पर फील्ड में उतर कर काम करना होगा.

आरएसएस ने ग्राउंड लेवल पर किया काम

राका अध्यक्ष ने आगे कहा कि आरएसएस ने विधानसभा चुनाव के दौरान ग्राउंड लेवल पर जमकर काम किया. बीजेपी व संघ के बीच बेहतर समन्वय था. संघ के स्वयंसेवकों के साथ बीजेपी कार्यकर्ताओं ने घर-घर जाकर प्रचार किया. इस वजह से चुनाव में महाविकास आघाड़ी को बड़ी हार का सामना करना पड़ा. इससे हमें भी सबक सीखने की जरूरत है.

निकाय चुनाव में युवाओं को मौका

पवार ने इस बात पर जोर दिया है कि आगामी स्थानीय निकाय चुनाव में ज्यादा से ज्यादा युवा नेताओं को मौका दिया जाना चाहिए. उन्होंने कहा कि बदलते दौर के साथ अब हमें भी बदलने की जरूरत है. ऐसे में अब आम कार्यकर्ताओं को आगे रखना होगा.

टाटा टेक्नोलॉजीज इनोवेंट 2024 के विजेता घोषित

टाटा टेक्नोलॉजीज, एक वैश्विक उत्पाद इंजीनियरिंग और डिजिटल सेवाओं की कंपनी ने टाटा टेक्नोलॉजीज इनोवेंट हैकाथॉन के दूसरे संस्करण के सफल समापन की घोषणा की. जेनरेटिव एआई

पर केंद्रित इस हैकाथॉन का आयोजन माइक्रोसॉफ्ट और टाटा मोटर्स के सहयोग से किया गया. इसका उद्देश्य भारत भर के युवा इंजीनियरिंग स्टूडेंट्स को एक ऐसा मंच प्रदान करना था, जहां वे विनिर्माण क्षेत्र की वास्तविक चुनौतियों का समाधान पेश कर सकें. शीर्ष दस टीमों पुणे के हिंजवडी में टाटा टेक्नोलॉजीज मुख्यालय डेमो डे में भाग लिया, जहां उन्होंने अपने अभिनव प्रोटोटाइप प्रस्तुत किए और दर्शकों को प्रभावित किया. चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली की विजेता टीम, कोडज़ेफायर को इंजीनियरिंग उत्कृष्टता के लिए उनके सतत सामग्री एकीकरण के लिए 3,00,000 रुपये के नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया. पटियाला के थापर इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के स्पेनगिट कोडर को कार में सुरक्षित अनुभव के लिए उनके एआई-संचालित शोर रद्दीकरण के लिए 1,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार मिला और उन्होंने दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया.

सिताबानी की महारानी नककटी का नटखट

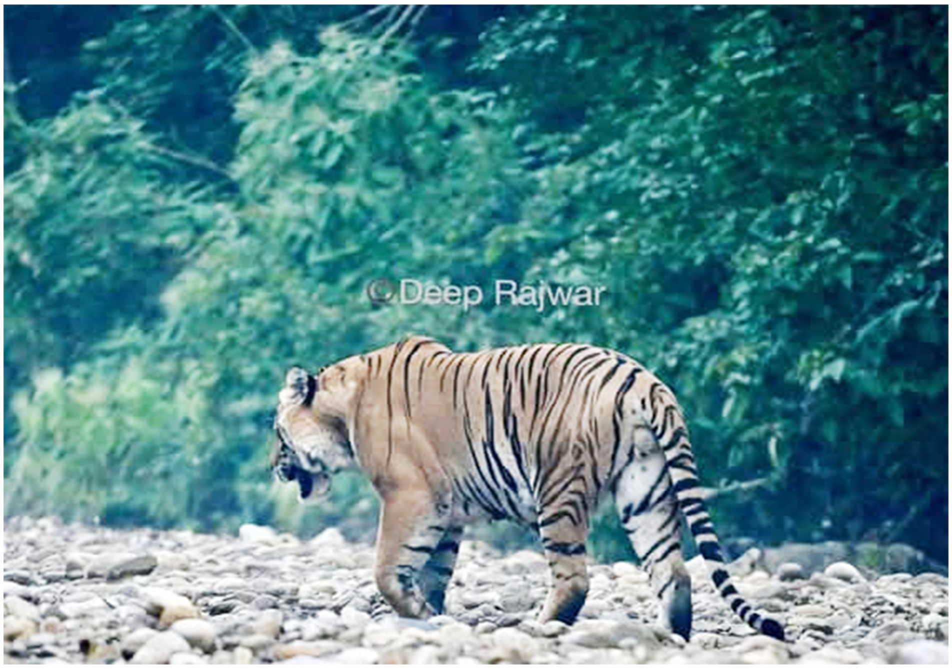

दीप रजवार

ज़िंदगी का मज़ा तभी है जब आप किसी काम को करने की ज़िद ठान लो और उसे पूरा करके ही रहो,
एक ज़िद मैनें भी ठानी थी जिसे पूरा करने में पूरे 9 महीने लग गए पर आख़िरकार सफलता मिल ही गई.
ये कहानी उस विशालकाय नर बाघ की है जिसकी वीडियो मैंने कुछ समय साझा करी थी जब में पेड़ पर बैठा हुआ था और मेरी गंध से उसे मेरी उपस्थिति का पता चल गया था और वो भाग के झाड़ियों में घुस गया था और तब में केवल मोबाइल से उसका वीडियो ही बना पाया था.
तब से मैंने उसको अपने कैमरे में उतारने की ज़िद ठान ली थी ये जानते हुए भी की ये उतना आसान नहीं होने वाला था मेरे लिए उसका सबसे बड़ा कारण था इस नर बाघ का बहुत ही शर्मीला होना जो सड़क पार भी करता था तो भाग के या जब सड़क सुनसान हो.. वैसे इस बड़े नर बाघ से मेरा काफ़ी भावनात्मक रिश्ता रहा है क्यूंकि ये सिताबानी की महारानी नककटी/ सीता (जो अब नहीं रही) का बेटा है और जब ये एक साल के लगभग का था तब इसे मैंने पूरे परिवार के साथ अपने कैमरे में उतारा हुआ है और उसे बाद भी खासकर जब ये 3 साल को हो गया था तब भी..
इस नर बाघ की ऐसी खूबी जो इसे औरों से अलग बनाती थी वो था इसका बड़ा सर जो इसको अन्य शावकों से अलग बनाता था.
हालाकि नर बाघ अपने बड़े आकार और सर की वजह से अलग ही पहचाने जाते है पर इस नर बाघ का सर युवा अवस्था से ही बड़ा था.
जब से इस नर बाघ ने अपना ख़ुद का इलाक़ा स्थापित किया इसका दिखना कम हो गया दिखता भी था तो भागते हुए.
कई मौक़े मिले पर हर बार ये मुझे चकमा देने में कामयाब रहा.
पर मैं भी पूरा ज़िद्दी सा, में भी लगा रहा और इसे इसके पदचिह्नों से इसे खोजता रहा आँखिरकार वो दिन आ ही गया जब में नाले में बैठकर कुछ हलचल होने का इंतज़ार कर रहा था जो मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन चुका था अलग अलग जगह पर जाकर जंगल के संकेतों को समझकर कुछ होने का इंतज़ार करना..
में नियति पर विश्वास करता हूँ आप कितने भी कर्म कर करो होता तभी है जब होना होता है.
रोज़ाना की तरह में बैठा हुआ सपने देख रहा था कि बाघ ऐसे आयेगा, वैसे आयेगा जो में देखता रहता हूँ, हालाकि नाले के बायी और हिरणों का एक झुंड नज़र आया था तो थोड़ा सा मन में आया कि यहाँ तो हिरण घूम रहे हैं टाइगर कहाँ होगा यहाँ..
पर ये भी आया कि क्या पता टाइगर घात लगा के बैठा हो शिकार के लिए और इसे उधेड़बुन में बैठे बैठे पूरे 2 घंटे हो चुके थे कोहरे की चादर ने सूरज को आपके आगोश में ढक लिया था और सर्द हवा मेरा इम्तिहान ले रही थी तभी मुझे ऐसा एहसास हुआ जैसे ऊपर ढांग/भिड़े (छोटी पहाड़ी) पर हलचल हो रही है और जैसे जी गर्दन घुमा के ऊपर की तरफ़ देखा तो झाड़ियों के पीछे से मुझे कुछ सरकता हुआ सा नज़र आया में बड़बड़ाया .टाइगर.. आ गया
पूरा माहौल बदल चुका था और रोमांच से मेरे

जंगल -जंगल

दिल की धड़कने ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगी थी वो इसलिए की मेरे से 50-60 मीटर की दूरी पर टाइगर के नाले पर उतरने का रास्ता था जिस पर में कई मौकों पर उसके पदचिह्नों को देख चुका था पर वो वहीं से उतरेगा या ऊपर ही ऊपर चला जाएगा ये पक्का नहीं था..

में मन ही मन प्रार्थना कर रहा था कि हे प्रकृति माँ, हे वन देवी आज निराश मत करना, हे वनराज आज निराश मत करना और सबने मेरी प्रार्थना को सुना और मेरी प्रार्थना स्वीकार हुई,

नाले में हलचल हुई और पत्थर के गिरने की आवाज़ आई तो मुझे पक्का यकीन हो गया कि टाइगर नीचे उतर रहा है और किसी भी समय वो मेरे सामने आ जाएगा..

रोमांच अपने चरम पर था और बेचैनी और उत्तेजना से मेरा पूरा शरीर काँप रहा था, वीडियो कैमरा चालू कर दिया था और ख़ुद कैमरे को उस जगह की और तान के अपने सपने को जीने का इंतज़ार करने लगा..

और तभी..

घास के पीछे उसकी पहली झलक नज़र आई तो ख़ुशी का ठिकाना ना रहा ऐसा लगा मानों जैसे दिल पर रखा हुआ बरसों पुराना बोझ उतर गया हो

मेरी उपस्थिति से बेख़बर वो नाले में उतर चुका था और अपनी ही मस्ती में आगे को बढ़ चला था तो एक निराशा का भाव आ गया कि ये तो सीधे आगे को जा रहा है , आगे से तो फोटो मिली ही नहीं तभी चीतल टाइगर को देख के बोला मानो ऊपर वाले ने मेरी आवाज़ सुन ली हो और वो रुका और मुड़ा और आवाज़ वाली दिशा में देखने लगा, फिर वो उसी दिशा में आगे बढ़ने लगा तो मेरी ख़ुशी का ठिकाना ना रहा..मन चाहे फोटो जो मिल रहे थे वो फिर रुका और झुकाऔर बहती हुई पानी की पतली धारा के बगल में बैठ कर अपनी प्यास बुझाने लगा और काफ़ी देर तक ऐसी ही पानी पीता रहा और फिर उठा और आगे को बढ़ चला..

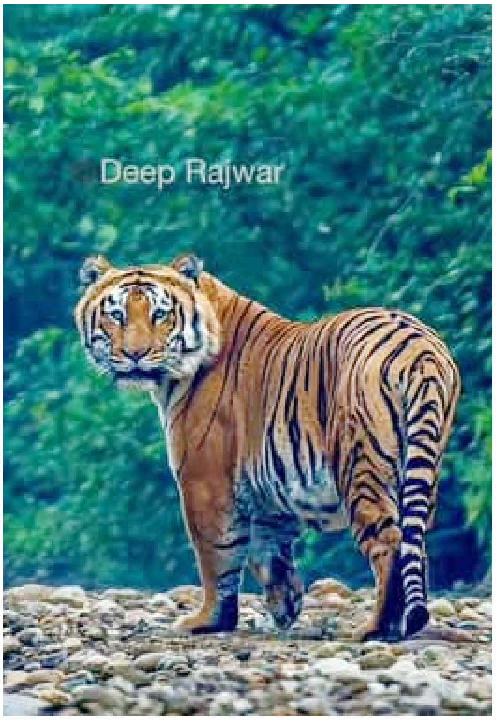

जैसे जैसे वो आगे को बढ़ रहा था वैसे वैसे मुझे फिर से निराशा हो रही थी मानों ऐसा जैसे सब कुछ होके भी एक खालीपन सा होता है और वो इसलिए की में अब तक उसके चेहरे की फोटो नहीं ले पाया था क्यूंकि नर बाघ को जब तक आगे से ना देखो और उसके बड़े आकार के सर की फोटो ना खींचो तो देख के भी सब कुछ अधूरा सा ही रहता है

तभी फिर मेरी ऊपर वाले ने सुनी या बोलो तो प्रकृति माँ की कृपा हुई और फिर ज़ोर से चीतल बोला और वो रुका और उसने फिर आवाज़ वाली दिशा में पलट के देखा और यही तो में चाह रहा था, इसी पल का ही तो इंतज़ार था और यही पल इस टाइगर साइटिंग का सबसे ख़ूबसूरत पल था..

उसका बड़ा सा सर उसे बड़ा ही ख़तरनाक लुक दे रहा था जिसे देख शरीर में झुरझुरी सी हो रही थी..

फिर वो आगे को बढ़ चला और आँखों से ओझल हो गया..

ऐसा लग रहा था मानों जैसे कोई सपना चल रहा हो यकीन कर पाना मुश्किल हो रहा था ये सोच के कि सच में मैंने ये पल जिया था..

कैमरा चेक किया तब जाके यकीन हुआ कि हाँ मैंने ये सपना सच में जिया है..

ये एक बड़ा ही भावुक कर देने वाला क्षण था और में मन ही मन हाथ जोड़ का सबका धन्यवाद अदा कर रहा था कि आख़िरकार सबके मेरी सुनी खासकर वनराज ने और मुझे अपने दर्शन दिये .

दीप रजवार वरिष्ठ फोटोग्राफर

www.instagram.com/rajwar_deep

'पश्मीना' की ठिठुरन

दिनेश चौधरी
वरिष्ठ समीक्षक और आलोचक

मंच बिल्कुल सादा और खाली है, सिवाय उन तीन चौखटों के जिनमें सफेद कपड़ों की पट्टियाँ लटकी हुई हैं। ऐन शुरुआत में ही इन्हीं के बीच से होकर एक काफिले को गुजरना है। बंदूकधारी सैनिकों की तैनाती बता रही है कि सरहद वाला इलाका है। काफ़िले में चल रहे लोगों के कंधों पर जो माल-असबाब है, वह उनकी गुरबत की गवाही दे रहा है। यों भी अमीर-उमराव इस तरह से घबराये हुए-से थोड़ी चलते हैं! नहीं देखती। यह देखने का काम सियासतदां का होता है। वे यह भी देखते हैं कि जहाँ कहीं जिंदा लोग लाशों के ढेर में तब्दील हो रहे हों तो बतौर खिराजे-अकीदत उन पर फूल चढ़ाने के काम में कोई कोताही न हो। एक अदद फूल का तो हक बनता ही है उनका! बीच वाले सफेद चौखटे से चलकर एक लाश आयी है। लाश ही है। लाश इसी तरह चल सकती है। चेहरा उतना ही भावहीन है। यह तो कुछ देर में पता चलता है कि वे मिसेज

न जाने क्या होता है कि अचानक गोलियों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ती है और एक चलता हुआ काफिला लाशों के ढेर में तब्दील हो जाता है। जब गोलियाँ चलती हैं तो सबको निशाने पर लेती हैं। बंदूक की गोली इंसान का मजहब

सक्सेना हैं और (अब तक) जिंदा हैं। पूरी जिंदगी अभी सामने पड़ी है पर हालात कुछ ऐसे हैं कि खींच-खींच कर पीछे की ओर धकेल ले जाते हैं। कभी-कभी जिंदा रहना मरने से भी मुश्किल होता है- "मरते हैं आरज़ू

में मरने की/मौत आती है पर नहीं आती।" सक्सेना साहब की हालत भी कुछ बेहतर नहीं है पर वे भी जीने की भरपूर कोशिश में लगे हुए हैं। इसी कोशिश के तहत उन्हें हर बार की तरह इस बार भी छुट्टियों में सैर पर जाना है और सफर की मुकम्मल तैयारी चल रही है। सैरगाह, होटल, रेस्तराँ की खोज से लेकर खरीदे जाने वाले सामानों की फेहरिश्त तक। इन सब की जद्दोजहद में मगर दोनों बीच एक चुप्पी है। कुछ है, जिसे छुपाया जा रहा है। चुप्पी चुभने वाली है और सच कहा जाये तो बहुत तेज आवाज में बोलती हुई-सी। तय पाया गया कि वे इस बार कश्मीर जायेंगे। जाना तो नहीं चाहते, फिर भी जाएंगे। जिद है सक्सेना साहब की। मिसेज सक्सेना ने पश्मीना के बहाने इसमें खुद को भी इन्वॉल्व कर लिया है। वे भली महिला हैं। जहीन भी। दुनिया और दुनियादारी की समझ रखती हैं। एक मध्यमवर्गीय परिवार में अपनी माली हालत और उड़ती हुई आकांक्षाओं के बीच संतुलन साधने का हुनर उन्हें खूब आता है। वे हालात पर भी काबू रख सकती हैं और मिस्टर सक्सेना पर भी। कोई चीज बेकाबू है तो वह अतीत है जो उन्हें बार-बार पीछे खींच रहा है।

बीते दिनों की खुशनुमा बातें अब सिर्फ यादों में तब्दील होकर कितनी तकलीफदेह हो गई हैं। इस तकलीफ का इजहार बार-बार उन्हीं गाढ़ी चुप्पियों से होता है; जो कभी भींचे हुए होठों से तो कभी सूनी आँखों से बयान होती हैं। उस देह-भाषा से भी जब ऐन शुरुआत में ही एक लाश चलकर आयी थी। जैसे मन्द्र सप्तक के भारी सुरों में लगातार बजती बाँसुरी के बाद तार सप्तक में संतूर की खिलती-खिलखिलाती खनखनाहट सुनाई पड़ती है, उसी तरह इस गमजदा माहौल में भी अचानक मुस्कुराने की एक वजह निकल आती है। एक ऐसा जोड़ा इन संजीदा किरदारों के बीच नमूदार होता है, जो आज के नव-धनाढ्य तबके का नुमाइंदा है। इसकी जेब में सिक्कों की खनखनाहट है, पर यह नितांत फूहड़ है। इनके दिमाग की नसें इनके बटुओं से होकर निकलती हैं। ये वही धनपशु हैं जो आज के समाज को उस ओर हाँकते चले जा रहे हैं, जिन्हें खुद ही नहीं पता कि कहाँ जाना है और क्यों जाना है। एक अंधी दौड़ में सिर्फ आगे रहने की हवस है, जिसके लिए औरों को जितना भी धकियाया जा सके, उसके लिए कोई लिहाज या संकोच नहीं करना है। वे अपनी हरकतों से दर्शकों को हँसा रहे हैं, हालांकि असल जिंदगी में यह फितरत रुलाने वाली है।

बस इसके बाद जो कुछ है वह स्तब्ध करने वाला है। मौत सिर्फ एक नहीं है। अनजाने में मिसेज सक्सेना उन हसीन वादियों में घूम आयीं हैं, जहाँ मरने से पहले उनका बेटा हो आया था। एक कमबख्त तुड़े-मुड़े खत ने यह राज खोलकर रख दिया है और जो लाश अभी तक किसी तरह जिंदा थी, अब सचमुच ही मरने लगी है। तिल-तिल कर जीना और जरा-जरा सा मरना ही उसकी नियति है, पर वह अकेली तो नहीं है! इस गम के मारे और भी हैं। वह सौदागर भी जो पश्मीना के जरिए अपना हुनर बेच रहा है और इस बार के सौदे में जो शाल जानी है, उसके हर रेशे में एक मासूम बच्चे की छुअन है। दर्द एक जगह से होकर दूसरी जगह जा रहा है।

जब गोलियाँ चलती हैं तो सबको निशाने पर लेती हैं। बंदूक की गोली इंसान का मजहब नहीं देखती। यह देखने का काम सियासतदां का होता है। वे यह भी देखते हैं कि जहाँ कहीं जिंदा लोग लाशों के ढेर में तब्दील हो रहे हों तो बतौर खिराजे-अकीदत उन पर फूल चढ़ाने के काम में कोई कोताही न हो। एक अदद फूल का तो हक बनता ही है उनका! बीच वाले सफेद चौखटे से चलकर एक लाश आयी है। लाश ही है। लाश इसी तरह चल सकती है। चेहरा उतना ही भावहीन है। यह तो कुछ देर में पता चलता है कि वे मिसेज सक्सेना हैं और (अब तक) जिंदा हैं। पूरी जिंदगी अभी सामने पड़ी है पर हालात कुछ ऐसे हैं कि खींच-खींच कर पीछे की ओर धकेल ले जाते हैं। कभी-कभी जिंदा रहना मरने से भी मुश्किल होता है- 'मरते हैं आरज़ू में मरने की/मौत आती है पर नहीं आती।' सक्सेना साहब की हालत भी कुछ बेहतर नहीं है पर वे भी जीने की भरपूर कोशिश में लगे हुए हैं।

पूरी कहानी बयान करने का न तो कोई मकसद है, न इरादा। पहले ही कहा था कि गोली चलती है तो वह निशाने का मजहब नहीं देखती। नहीं देखती कि वह पश्मीना शाल बेचने वाले हैं या खरीदार। नहीं देखती कि वह अतुल है या आदिल। पश्मीना तो सिर्फ एक बहाना है। बाज लोग अपने हुनर से कारीगर और कारीगरी, दोनों को खत्म करने का माद्दा रखते हैं। वे बर्फ की तरह चमकदार पर ठंडे और संवेदनहीन हैं। आखिरकार हमारी छोटी सी दुनिया को चलाने की जिम्मेदारी उन्हीं के मजबूत काँधों पर है। धनपशु उन्हीं के टूल हैं या शायद वे धनपशुओं के- "मस्लहत-आमेज़ होते हैं सियासत के कदम/तू न समझेगा सियासत तू अभी इंसान है।" खालिस इंसान तो अब भी बेचारा है। बेहिस बर्फ की ठिठुरन जब इंसान के साथ इंसानियत को ही कंपाने लगे तो मजबूती से बुनी हुई पश्मीना का आसरा होता है। यह रेशा-रेशा बुनकर बनी होती है, जैसे जिंदगी साँस-दर-साँस चलती है। इन्हें उधेड़ने-उखड़ने से बचा लिया जाए तो जिंदगी बची रहेगी और इसके लिए जरूरी गर्माहट भी।

पार्श्व में उभरने वाले आलाप के सुर ऊँचे होते जा रहे हैं, और ऊँचे..बहुत ऊँचे। इससे छलकने वाला दर्द गहरा रहा है, और गहरा..बहुत गहरा। देखने वाले अपनी-अपनी संवेदनाओं के साथ इन्हीं दो बिंदुओं के बीच कहीं लटके हुए हैं। किसी ने अपने आँसू पोछ लिए हैं तो किसी ने खुद को बहने दिया है। भीगे तो सभी हैं।

28 दिसम्बर 24 की शाम ट्रेजर आर्ट एसोसिएशन, दिल्ली की नाट्य प्रस्तुति 'पश्मीना' को देखते हुए। आलेख : मृणाल ठाकुर, निर्देशन : साजिदा साजी। 'इत्यादि' का आयोजन 'जलम।'

●

किताबें खरीदने वालों के सामने क्या हमारा सिर नहीं झुकना चाहिए?

गुणवंत शाह
पद्मश्री से सम्मानित
वरिष्ठ लेखक

जब भी मैं किसी समृद्ध पुस्तक के सम्पर्क में आता हूँ, तब अपनी अज्ञानता से प्रभावित हो जाता हूं। समृद्ध पुस्तक यानी ऐसी किताब, जो मुझे मेरी हैसियत से वाकिफ कराती है। मुझे मेरी औकात बता देती है। मैं एक ऐसे डॉक्टर को जानता हूं, जो हृदय रोग के विशेषज्ञ हैं। उनका सारा समय धन संचय में लग रहता है। उनके पास धन को खर्च करने का भी समय नहीं बचता। हां, उनकी पत्नी धन खर्च करने में माहिर हैं। हमेशा शॉपिंग के लिए बाजार जाती हैं, देश-विदेश घूमती हैं। विदेशों में उनका काला धन खर्च होता है, जिसे वे अपना अहंकार मानती हैं। पति के पास समय ही नहीं है। उनकी मातृभाषा दयनीय है, पर उनकी अंग्रेजी असह्य है। उनसे मिलकर ऐसा लगता है, जैसे किसी गरीब करोड़पति से मिल रहे हों। उनका वास्ता न साहित्य से है, न कला से और न ही विज्ञान से उनकी प्रैक्टिस जोरदार चल रही है। विचार करने से वे काफी दूर हैं। उनके जीवन का भी कोई अता-पता नहीं है। बस वे केवल जी रहे हैं। उनकी ऐसी 'मालदार गरीबी' देखकर विषाद होता है। यह विषाद अर्जुन का नहीं, अनपढ़ व्यक्ति का है। उनके सामने बीमारों की भीड़ ही उनका आश्वासन है। धन कहां और कैसे खर्च करना है, यही उनका 'अज्ञान वैभव'! ऐसे इंसान को कोई 'गरीब नहीं कहता। यह एक ऐसा अनपढ़ व्यक्ति है, जो यह भी नहीं सोच पाता कि किसी गरीब से वह अपनी फीस न ले। इतनी करुणा भी उसके हृदय में नहीं बची है।

पुपुल जयकर ने 'इंदिरा गांधी' पर किताब लिखी है। इस किताब में एक घटना का जिक्र है। यह घटना 1924-25 की है। पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धार्थ शंकर रे को अपने दादा की पुरानी चीजों में से एक आमंत्रण पत्र मिला। यह

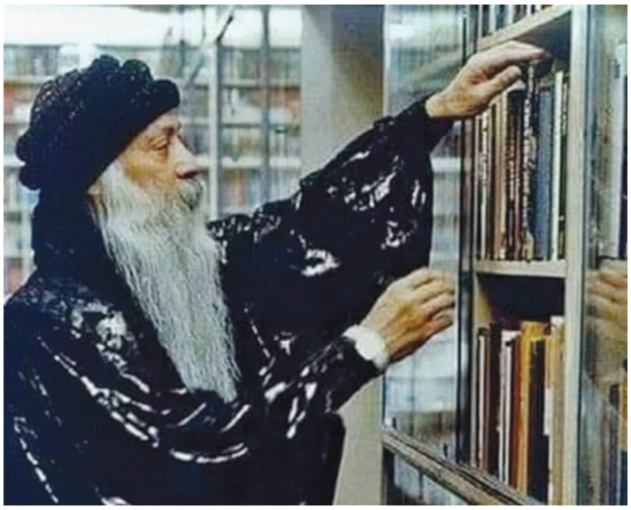

आमंत्रण पत्र मोती लाल नेहरु की 64वीं वर्षगांठ पर उनकी संतानों, जवाहर, विजयालक्ष्मी और कृष्णा ने मिलकर अपने दोस्तों को भेजा था। यह आमंत्रण पत्र हर पुस्तक प्रेमी को पढ़ना चाहिए। उस आमंत्रण पत्र में जो कुछ लिखा था, उसका मजमून इस तरह से है...:

'हमारे पिता की 64वीं वर्षगांठ पर 20 अप्रैल की शाम बुक-टी के लिए आप पधारें, इसके लिए हम जवाहर लाल नेहरू, विजयालक्ष्मी पंडित और कृष्णा कुमारी यह आमंत्रण पत्र आपको भेज रहे हैं। अंग्रेजी, हिंदी या उर्दू या किसी भी अंतरराष्ट्रीय भाषा की एक किताब आप अपने पास रखेंगे आपके मित्र अपनी कौन सी किताब प्रकाशित कर रहे हैं, इस संबंध में आपको अटकलें लगानी हैं। हममें से जो भी साथी सही अटकलें लगाएगा, उसे ऊंचे आसन पर बिठाकर इस प्रसंग का स्मृति चिह्न दिया जाएगा। परंपरा के अनुसार भोजन, चाय या शरबत भी होगा। यदि आप अधिक समय तक रुकते हैं, तो आइसस्क्रीम और घर का बना नींबू पानी भी मिल जाएगा। आप आमंत्रण स्वीकार कर रहे हैं, इस आशय का पत्र यदि आप हमें भेजेंगे, तो हमें अच्छा लगेगा।'

एक सूचना दूं। हर साल ऐसे अनोखे आमंत्रण से पाठकों को नई-नई किताबें खरीदने की चाहत पैदा हो, ऐसा होना चाहिए। ऐसी घटना नेहरू परिवार में ही हो सकती है। इसे 'बुक कल्चर' कहा जा सकता है। एक उच्च स्तर की समिति द्वारा एक सूची इसकी बनाई जानी चाहिए कि इस साल न पढ़ी जाने वाली किताबें कौन-कौन थीं। ऐसी उधार की पुस्तकों का स्थान कबाड़ी की दुकान ही हो सकती है। किताबें महंगी हो, यह सहन हो सकता है, पर वह उधार की हो, यह सहन नहीं होता।

शिक्षक या ग्रंथपाल भले ही अच्छे पाठक न हो, तो प्रकाशक ऐसी किताबों द्वारा अपने पुस्तकालयों को ही भ्रष्ट करते हैं। बीमार मिलों के लिए ऊहापोह होती है, पर बीमार पुस्तकालयों के बारे में कोई कुछ नहीं सोचता। जो प्रकाशन स्वयं ही पाठक नहीं है, वह दुकानदार हो सकता है, परंतु पाठकों के लिए ईमानदार नहीं हो सकता।

पुस्तकालय में प्रवेश करने के पहले अपने जूते-चप्पल बाहर उतारने की परंपरा क्या शुरू हो सकती है ? हां, पुस्तकालयों को देवस्थान का दर्जा मिलना चाहिए। देवालय दुकान बने, उसके बजाय दुकान देवालय बने, यह संभव है। 'किताबें बातें करती हैं' इस बात में दम है। पैसे का मूल्य कम नहीं है, परंतु थोड़ी-सी तकलीफ सहकर भी दो अच्छी किताबें खरीदने वाले के लिए हमारा सिर झुक जाना चाहिए।

लोककहानी

राजेंद्र रंजन चतुर्वेदी

लेखक प्राच्य भारतीय विद्या और पौराणिक इतिहास के प्रतिष्ठित विद्वान हैं

एक नगर था, उसमें एक गरीब आदमी रहता था।

रोज कुआ खोदता और रोज पानी पीता।

जो कुछ कमा कर लाता, बीबी -बच्चों के साथ खर्च करता ,आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करता।

एक दिन राजा वेश बदल कर नगर घूमने निकला कि लोग किस प्रकार जीवन बिताते हैं?

गरीब आदमी के घर में से गीत गाने की आवाज आ रही थी। उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया!

उसने देखा गरीबी में भी वह आदमी को सुख चैन से रह रहा है।

राजा ने पूछा कि क्या करते हो ?

बाजार जाता हूँ , वहाँ जो भी काम मिल जाता है, कर लेता हूँ, जूते की सिलाई भी कर लेता हूँ और सफाई भी कर लेता हूँ,

कस्सी भी चला लेता हूँ, घास भी छील लेता हूँ। सामान ढोने का भी काम कर लेता हूँ।

राजा बोला कि यदि एक दिन राजा बाजार बन्द कर दे तो तुम क्या करोगे?

हे राम- हे राम ! ऐसा तो दुश्मन पर भी न बीते! क्या कह रहे हो ? तब तो हमें भूखा ही रहना पड़ेगा!

दूसरे दिन राजा ने हुक्म दिया कि आज बाजार बन्द रहेगा, कोई भी व्यापार करने या रोजगार करने नहीं जायेगा।

वह गरीब आदमी क्या करता? उसने एक घर की स्त्री के लिये पानी भर दिया, दूसरे एक घर के लिये लकड़ी चीर दी।

जो कुछ मिला,उससे घर का राशन ले आया और घर में बीबी बच्चों के साथ हँस-बोल रहा था कि वेश बदले हुए राजा फिर उसके यहाँ आ गया।

अरे! तुम तो आज भी खुश हो! कैसे ?

गरीब बोला नगर के राजा का सत्यानाश हो, बड़ा अन्यायी राजा है, मैं क्या करता, आज पानी भर कर, लकड़ी काट कर घर का काम चला रहा हूँ!

दूसरे दिन राजा ने हुक्म दिया कि आज वह गरीब आदमी हमारे महल की चौकीदारी करेगा।

गरीब आदमी क्या करता? उसने महल का पहरा दिया, बदले मे उसे कुछ भी नहीं मिला।

मन ही मन,वह राजा को गाली देता हुआ घर आया! बीबी बोली कोई बात नहीं, बहुत से आदमी तो चार-चार दिन भूखे रहते हैं, हम आज एक दिन भूखे ही रह लेंगे।

संतोष कर के वे हँसने-बोलने लगे।

गरीब आदमी बैठे-बैठे एक लकड़ी को छीलने लगा, छीलते हुए उसने लकड़ी की तलवार बना दी।

जब दूसरे दिन वह महल का पहरा देने गया तो उसने लोहे की तलवार तो निकाल ली और लकड़ी की तलवार म्यान में रख दी और असली तलवार बाजार में बेच कर घर का राशन ले गया। बीबी बच्चों के साथ हँसने-बोलने लगा।

वेश बदल कर राजा आया, अरे यहाँ तो आज भी सुख है?

वह उसके घर में गया आज कैसे ?

गरीब आदमी ने कहा कि राजा का सत्यानाश हो, अन्यायी है,मैंने तो आज उसकी तलवार बेच कर घर का काम चलाया है।

राजा ने मन ही मन कहा कि कल बच्चू को सबक सिखाना है।

दूसरे दिन दरबार लगा तो उसने एक नौकर को बुलाया और उस पर क्रोध करने लगा।

गरीब आदमी को बुला कर कहा कि तलवार निकालो और इसका सिर काट दो।

गरीब आदमी क्या करता ? उसने हाथ जोड़ कर आसमान को देखा और कहा कि हे भगवान!

यदि यह आदमी कसूरवार है तो मेरी तलवार इसका गला काट ही देगी और यदि यह कसूरवार न हो तो मेरी तलवार लकड़ी की बन जाय!

तलवार लकड़ी की बननी ही थी।

दरबारियों ने भी उसकी सचाई की प्रशंसा की और उसे भगवान का चमत्कार समझ कर उसे इनाम दिया तब राजा क्या करता ?

उसने भी कुछ सिक्के दे कर कहा जाओ, जो कुछ करते रहे हो करो।

बांग्लादेशियों का करो सर्वे

शिवसेना सांसद देवड़ा का सीएम को पत्र

शिवसेना सांसद मिलिंद देवड़ा ने अभिनेता सैफ अली खान पर हुए हमले के बाद महाराष्ट्र में नौकरी के लिए अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों का तत्काल सर्वेक्षण करने की मांग की है. उन्होंने इस संबंध में सीएम देवेंद्र फडणवीस को एक पत्र लिखा है. देवड़ा ने बिना के जांच-पड़ताल बांग्लादेशी नागरिकों को नौकरी पर रखने वाली कंपनियों की भी जांच कर उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है. सांसद का मानना है कि महाराष्ट्र में रोजगार के लिए अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों का तुरंत सर्वेक्षण करना आवश्यक है. जिलाधिकारी, महानगरपालिका और अन्य एजेंसियों के सहयोग से इस सर्वेक्षण अभियान को चलाकर आवश्यक दस्तावेजों के बिना रहने वाले व्यक्तियों की जांच और पहचान की जानी चाहिए. नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई होनी चाहिए. अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों को काम पर रखने वाली कंपनियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए.

बिना जांच के नौकरी पर रखने वालों पर भी एक्शन

सरकार से मानव संसाधन आपूर्ति कंपनियों के लिए सख्त नियमावली बनाने का भी आग्रह किया गया है. देवड़ा ने कहा है कि कंपनियों को किसी भी व्यक्ति को काम पर रखने से पहले उसके द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों की गहन जांच करनी चाहिए. नियमों का उल्लंघन करने वाली कंपनियों का लाइसेंस रद्द करने व उनके खिलाफ जुर्माना लगाने का भी नियम बनाया जाना चाहिए. यह सुनिश्चित करने के लिए कि कंपनियां नियमों का पालन कर रही हैं या नहीं, उनकी नियमित जांच भी की जानी चाहिए. अभिनेता सैफ के घर में जबरन घुसने और एक्टर पर हमला कर उन्हें घायल करने वाला आरोपी बांग्लादेशी निकला है. पुलिस के मुताबिक आरोपी हाउस कीपिंग विभाग में काम करता था.

तेंदुओं की नसबंदी से लगेगी लगाम

राज्य में तेंदुओं की बढ़ती संख्या महायुति सरकार के लिए परेशानी का सबब बन गई है. इसके चलते उनके हमले भी बढ़ते जा रहे हैं. वन्यजीवों और किसानों के बीच भी संघर्ष बढ़ गया है. इसी पृष्ठभूमि में तेंदुओं की बढ़ती संख्या पर लगाम लगाने के लिए उनकी नसबंदी के विकल्प पर विचार किया जा रहा है. राज्य के वन मंत्री गणेश नाईक ने कहा है कि यह प्रस्ताव केंद्र को भेजा जाएगा. क्योंकि इसके लिए उनकी अनुमति आवश्यक है. वे मंगलवार को मंत्रालय में आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में बोल रहे थे.

कम करने का एक उपाय नसबंदी

नाईक ने आगे कहा कि कई जगहों पर गन्ना के फसल कट जाने के बाद तेंदुए का निवास स्थान समाप्त हो जाता है और ऐसे में वे मानव बस्तियों में चले जाते हैं. इस दौरान वे इंसानी बस्तियों में कुत्तों और खेतों में काम कर रहे किसानों पर हमले करते हैं. विधान परिषद विधायक सत्यजीत तांबे ने भी हाल में तेंदुए की नसबंदी को लेकर पत्र दिया है. ऐसे में इनकी संख्या कम करने का एक उपाय नसबंदी है.

एक साल में 13 बाघों की मौत

नाईक ने बताया कि पिछले एक साल में राज्य में 13 बाघों की मौत हो चुकी है. कुछ स्थानों पर सूअरों के शिकार के लिए लगाए गए जाल में फंसकर बाघ मारे गए है, जबकि अन्य स्थानों पर अपने क्षेत्र को निर्धारित करने की लड़ाई में बाघ मारे गए हैं.

नागपुर चिड़ियाघर में बाघ की मौत की भी जांच की जा रही है. ऐसी रिपोर्ट है कि उन्हें बीफ की जगह चिकन दिया गया. हालांकि अभी अंतिम जांच रिपोर्ट आनी बाकी है, लेकिन माना जा रहा है कि उनकी मौत फंगल बीमारी के कारण हुई है. लेकिन अगर इसमें कोई दोषी पाया गया, तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी.

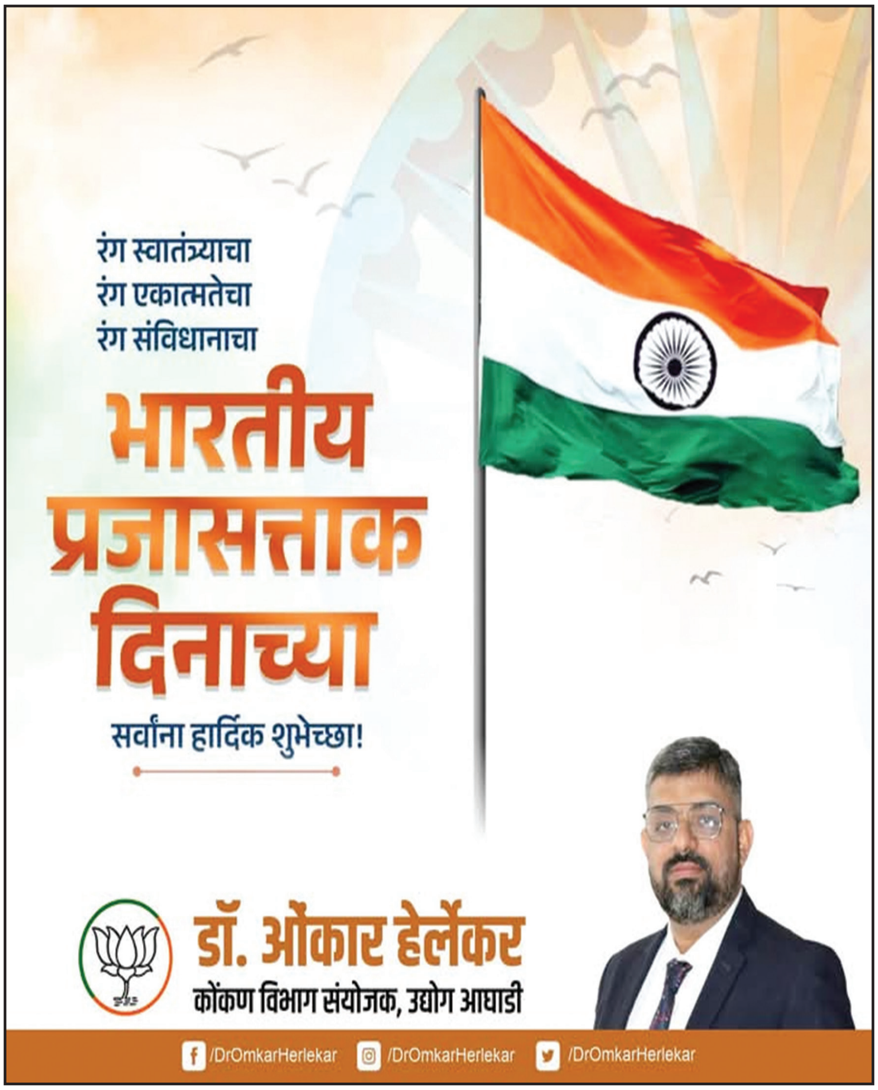

वरिष्ठ पत्रकार श्रीनारायण तिवारी को उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए डॉ. राममनोहर त्रिपाठी पत्रकारिता सम्मान से नवाजा गया। उन्हें यह सम्मान युग प्रवर्तक संस्था द्वारा जोगेश्वरी पूर्व स्थित श्रीराम मंदिर आश्रम हॉल में प्रदान किया गया। इस मौके पर रमेश बहादुर सिंह, ओपी तिवारी को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार अनुराग त्रिपाठी, पंडित बंसीधर शर्मा, संस्था अध्यक्ष पंडित दिनेशचंद्र मिश्र, पूर्व नगरसेवक सुरेंद्र दुबे, श्रीराम मंदिर के महंत मधुसूदन, शिवम बैसवारी समेत साहित्य प्रेमी, कवि और समाजसेवी उपस्थित थे।

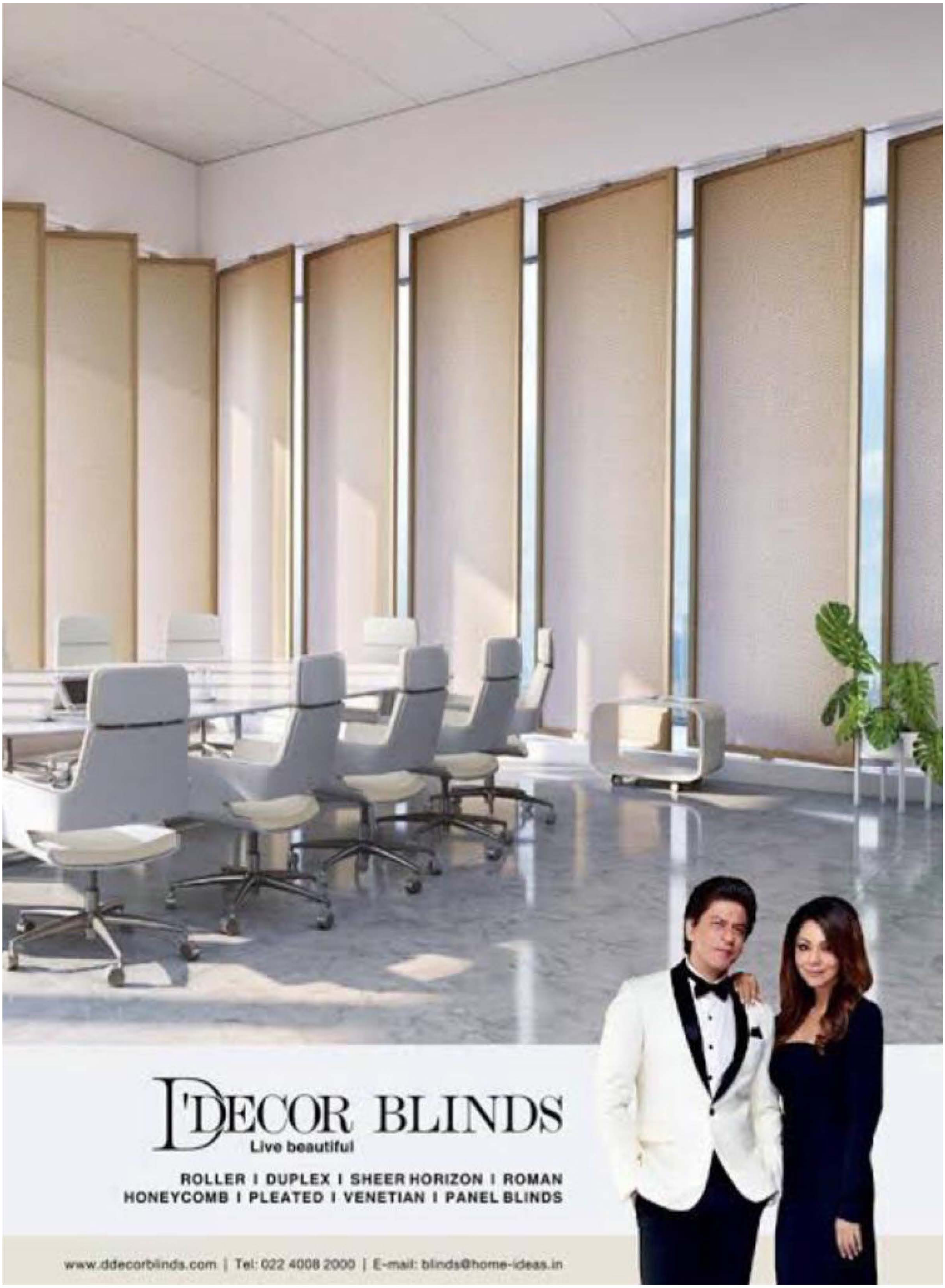
D'DECOR BLINDS
Live beautiful
ROLLER I DUPLEX I SHEER HORIZON I ROMAN
HONEYCOMB I PLEATED I VENETIAN I PANEL BLINDS
www.ddecorblinds.com | Tel: 022 4008 2000 | E-mail: blinds@home-ideas.in